गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रस्तुत...

18 नवम्बर से 24 नवम्बर 2018

# गुरुत्व ज्योतिष

## साप्ताहिक ई-पत्रिका



**Nonprofit Publications**

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष
साप्ताहिक ई-पत्रिका
18 नवम्बर से
24 नवम्बर 2018


संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय
92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418,
91+9238328785,

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com
www.gurutvakaryalay.in
http://gk.yolasite.com/
www.shrigems.com
www.gurutvakaryalay.blogspot.com/

पत्रिका प्रस्तुति

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय

फोटो ग्राफिक्स

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय


## गुरुत्व ज्योतिष साप्ताहिक ई-पत्रिका में लेखन हेतु फ्रीलांस (स्वतंत्र) लेखकों का स्वागत हैं...✍

गुरुत्व ज्योतिष साप्ताहिक ई-पत्रिका में आपके द्वारा लिखे गये मंत्र, यंत्र, तंत्र, ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, फेंगशुई, टैरों, रेकी एवं अन्य आध्यात्मिक ज्ञान वर्धक लेख को प्रकाशित करने हेतु भेज सकते हैं।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।


GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA) INDIA
Call Us: 91 + 9338213418,
91 + 9238328785
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in,
gurutva.karyalay@gmail.com

## अनुक्रम



## स्थायी और अन्य लेख

प्रिय आत्मिय,

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

# संपादकीय

हिन्दू संस्कृति में पौराणिक मान्यता हैं कि भगवान श्रीविष्णु ने आषाढ़ मास की शुक्ल एकादशी किए दिन शंखासुर नामक महापराक्रमी राक्षस का लम्बे युद्ध के बाद वध किया था और इस युद्ध की थकावट दूर करने के लिए श्रीविष्णु क्षीरसागर में जाकर सो गए थे और चार मास पश्चात देवउठनी एकादशी के दिन उठे थे। इस कलियुग में कार्तिक मास भगवान विष्णु की आराधना के लिए अत्यंत दुर्लभ हैं। भगवान विष्णु की आराधना हेतु कार्तिक मास के समान और कोई भी मास नहीं है। कार्तिक मास मनुष्य को धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष चारों प्रदान करने वाला है। कार्तिक मास में स्नान-दान एवं तुलसी का पूजन विशेषरुप से फलदायी होता है। कार्तिक मास में भगवान विष्णु एवं देवी लक्ष्मी की आराधना विशेष फलदायी सिद्ध होती हैं एवं उनके समक्ष दीपक जलाने से अतुल्य फलों की प्राप्ति होती हैं। विद्वानों का मत हैं, की यदि स्नान में कुशा, दान करते समय हाथ में जल, एवं जप करते समय संख्या का संकल्प अवश्य करलेना चाहिए, अन्यथा किये गये कर्म के फल की प्राप्ति नहीं होती है।

कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को बैकुण्ठ चतुर्दशी व्रत या बैकुण्ठ चौदस व्रत के नाम से जाना जाता हैं। मान्यता हैं, कि इस दिन स्वर्ग के द्वार हरी भक्तों के लिए खुले होते हैं। बैकुण्ठ चतुर्दशी व्रत में भगवान शिवजी और विष्णुजी का पूजन किया जाता हैं। बैकुण्ठ चतुर्दशी के दिन भगवान विष्णु का पूर्ण विधि-विधान से पूजन-अर्चन करना चाहिए। इस दिन भगवत गीता एवं श्रीसुक्त का पाठ करना विशेष लाभप्रद होता है। विद्वानों का मत हैं की बैकुण्ठ चतुर्दशी के दिन श्रीविष्णु का पूज एवं श्रीविष्णु की कथा का श्रवण करने से मनुष्य के समस्त पापों का नाश होता है। विष्णु मंत्र का जाप एवं स्तोत्र का विधि-विधान से पाठ करने से मनुष्य को बैकुण्ठ की प्राप्ति होती है। कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी अर्थात बैकुण्ठ चतुर्दशी भगवान विष्णु तथा शिवजी के संयुक्त पूजन का प्रतीक है। शास्त्रोक्त मतानुसार एक बार भगवान विष्णुजी काशी में भगवान शिवजी को एक सहस्त्र (हजार) स्वर्ण कमल के पुष्प चढ़ाने का संकल्प करते हैं। लेकिन जब अनुष्ठान का समय आता हैं, तब शिवजी, विष्णुजी की परीक्षा लेने के उद्देश्य से एक स्वर्ण पुष्प कम कर देते हैं। पुष्प कम होने की बात विष्णुजी को ज्ञात होती ही वह अपने दोनों कमल नयनों अर्पित करने के लिए तैयार होते हैं। विष्णुजी की श्रद्धा-भक्ति देखकर भगवान शिव प्रकट होते हैं, आज से कार्तिक मास की इस शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी बैकुण्ठ चतुर्दशी के नाम से प्रसिद्ध होगी। मान्यता हैं की इसी दिन शिवजी ने विष्णुजी को करोड़ो सूर्य की कांति के समान सुदर्शन चक्र भेट किया था।

इस साप्ताहिक ई-पत्रिका में संबंधित जानकारीयों के विषय में साधक एवं विद्वान पाठको से अनुरोध हैं, यदि दर्शाये गए मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना एवं उपायों या अन्य जानकारी के लाभ, प्रभाव इत्यादी के संकलन, प्रमाण पढ़ने, संपादन में, डिजाईन में, टाईपींग में, प्रिंटिंग में, प्रकाशन में कोई त्रुटि रह गई हो, तो उसे स्वयं सुधार लें या किसी योग्य ज्योतिषी, गुरु या विद्वान से सलाह विमर्श कर ले । क्योकि विद्वान ज्योतिषी, गुरुजनो एवं साधको के निजी अनुभव विभिन्न मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना, उपाय के प्रभावों का वर्णन करने में भेद होने पर कामना सिद्धि हेतु कि जाने वाली वाली पूजन विधि एवं उसके प्रभावों में भिन्नता संभव हैं।

आपका जीवन सुखमय, मंगलमय हो परमात्मा की कृपा
आपके परिवार पर बनी रहे। परमात्मा से यही प्राथना हैं...

चिंतन जोशी

## ***** साप्ताहिक ई-पत्रिका से संबंधित सूचना *****

- ई-पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख गुरुत्व कार्यालय के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- ई-पत्रिका में वर्णित लेखों को नास्तिक/अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- ई-पत्रिका के लेख आध्यात्म से संबंधित होने के कारण भारतिय धर्म शास्त्रों से प्रेरित होकर प्रस्तुत किया गया हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित जानकारीकी प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं और ना हीं प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ई-पत्रिका से संबंधित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- ई-पत्रिका से संबंधित किसी भी प्रकार की आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- ई-पत्रिका से संबंधित लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर दिए गये हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले धार्मिक, एवं मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं। यह जिन्मेदारी मंत्र- यंत्र या अन्य उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी।
- क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- ई-पत्रिका से संबंधित जानकारी को माननने से प्राप्त होने वाले लाभ, लाभ की हानी या हानी की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी जानकारी एवं मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या कवच, मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- ई-पत्रिका में गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रकाशित सभी उत्पादों को केवल पाठको की जानकारी हेतु दिया गया हैं, कार्यालय किसी भी पाठक को इन उत्पादों का क्रय करने हेतु किसी भी प्रकार से बाध्य नहीं करता हैं। पाठक इन उत्पादों को कहीं से भी क्रय करने हेतु पूर्णतः स्वतंत्र हैं।

अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

# कार्तिक शुक्ल एकादशी का धार्मिक महत्व

संकलन गुरुत्व कार्यालय

कार्तिक माह की शुक्ल पक्ष की एकादशी को देवउठनी एकादशी कहा जाता है। इसे देवोत्थान एकादशी, देवउठनी ग्यारस, प्रबोधिनी एकादशी आदि नामों से भी जाना जाता है। आषाढ़ शुक्ल एकादशी अर्थात देवशयनी एकादशी को देव सो जाते हैं, और इस दिन से चार्तुमास प्रारंभ होने के कारण सभी मांगलिक कार्य रुक जाते हैं। देवउठनी एकादशी को देव उठते हैं, क्योकि, एसी मान्यता है कि देवशयनी एकादशी के दिन भगवान विष्णु चार माह तक क्षीरसागर में सोए थे, जो चार माह उपरान्त देवउठनी एकादशी जागे थे। इस लिए इसे देवोत्थान अर्थात देवउठनी एकादशी कहा जाता है।

देवउठनी एकादशी से सभी मांगलिक कार्य शुरू हो जाते हैं। एकादशी के दिन पवित्र नदि-तीर्थ इत्याति में स्नान-दान, होम, यज्ञ तथा उपासना आदि का विशेष महत्व है। इस दिन से सभी मांगलिक कार्यों का प्रारंभ हो जाते हैं। इस दिन भगवान विष्णु-लक्ष्मी के सम्मुख शुद्ध घी का दीपक जलाएं। हिन्दू शास्त्रोंमें कार्तिक मास को सर्वश्रेष्ठ मास माना गया है।

इस कलियुग में कार्तिक मास भगवान विष्णु की आराधना के लिए अत्यंत दुर्लभ हैं। विद्वानों का मत हैं की, भगवान विष्णु की आराधना हेतु कार्तिक मास के समान और कोई भी मास नहीं है। कार्तिक मास मनुष्य को धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष चारों प्रदान करने वाला है।

कार्तिक मास में स्नान-दान एवं तुलसी का पूजन विशेषरुप से फलदायी होता है।

शास्त्रोंक्त मान्यता हैं, की कार्तिक मास में दीपदान करने से मनुष्य के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। स्कंद पुराण में वर्णित है कि कार्तिक मास में यदि कोई मनुषय मंदिर, पवित्र नदी के किनारे, तुलसी के निकटा, घर के पूजा स्थान एवं शयन कक्ष में दीपक जलाता है उसे सकल सुखों की प्राप्ति सरलता से होती हैं।

कार्तिक मास में भगवान विष्णु एवं देवी लक्ष्मी की आराधना विशेष रुप से फलदायी सिद्ध होती हैं एवं उनके समक्ष दीपक जलाने से अतुल्य फलों की प्राप्ति होती हैं।

विद्वानों का मत हैं, की यदि स्नान में कुशा, दान करते समय हाथ में जल, एवं जप करते समय संख्या का संकल्प अवश्य करलेना चाहिए, अन्यथा किये गये कर्म के फल की प्राप्ति नहीं होती है।

***

## इस वर्ष देवउठनी एकादशी से क्यों नहीं होगा मांगलिक कार्यों का शुभारंभ !

इस वर्ष 2018 में देव उठनी एकादशी 19 नवम्बर सोमवार को है। ज्योतिष के अनुसार सूर्य के वृश्चिक राशि में प्रवेश होते ही विभिन्न मांगलिक कार्य प्रारंभ हो जाते हैं। लेकिन इस वर्ष 2018 में सूर्य का वृश्चिक राशि में प्रवेश 16 नवंबर को हो रहा हैं, और देवउठनी एकादशी 19 नवम्बर को हैं। सामान्यतः देवउठनी एकादशी के दिन से सभी प्रकार के मांगलिक कार्य प्रारंभ हो जाते हैं, लेकिन 12 नवम्बर से 7 दिसम्बर तक गुरु अस्त रहेगा। जो 7 दिसंबर को गुरु का उदय होगा। इस कारण इस साल देवउठनी एकादशी के दिन से मांगलिक कार्यों का शुभारंभ नहीं होगा।

# तुलसी और शालिग्राम विवाह की पौराणिक कथा

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

एक कथा के अनुसार पूर्व जन्म में तुलसी का नाम वृंदा था, वृंदा का जन्म राक्षस कुल में हुआ था। वृंदा बचपन से ही भगवान विष्णु की भक्त थी। वृंदा पूर्ण विश्वास और निष्ठा से भगवान विष्णु की भक्ति में ही अपना समय व्यतित होता।

लेकिन एक बार वृंदा ने जंगल से गुजरते हुए उसे तपस्या करते हुए गणेश जी को देखा । गणेश जी के दिव्य रुप को देख वृंदा नें उनके सामने विवाह प्रस्ताव रखा। लेकिन गणेशजी ने वृंदा के प्रस्ताव से इनकार कर दिया।

इस पर क्रोधित होकर वृंदा गणेश जी को श्राप दे दिया और गणेश जी ने भी वृंदा पर क्रोध करते हुए उसका दैत्य के साथ विवाह होने का श्राप दे दिया। जिसके फलस्वरुप वृंदा का विवाह दैत्य राज जालंधर के साथ हुआ। वृंदा वृंदा बड़ी ही पतिव्रता थी सदा निष्ठा से अपने पति की सेवा किया करती थी और अपने पति के प्राणों की रक्षा के लिए विधि-विधान से इष्ट आराधना किया करती थी।

जब भी जालंधर किसी युद्ध के लिए जाता, तो वृंदा उसकी रक्षा के लिए और विजय की कामना से अपने इष्ट का पूजन करती। जिस कारण दैत्य जालंधर सभी जगह युद्ध में विजयी रहता था।

एक बार देवता और दानव में युद्ध हुआ, जलंधर के युद्ध पर जाते समय वृंदा ने कहा स्वामी आप युद्ध पर जा रहे हैं, लेकिन आप जब तक युद्ध भूमि से आप वापस नहीं आ जाते में आपकी रक्षा एवं विजय प्राप्ति हेतु पूर्ण भक्ति-भाव से इष्ट आराधना करुंगी।

जलंधर युद्ध में चला गया और वृंदा संकल्प ले कर इष्ट आराधना करने लगी। जिससे देवता भी जलंधर को हराने में असमर्थ हो रहे थे, पतिव्रता स्त्री की आराधना के प्राभाव को देख देवता भी चिंतित हो गये और भगवान विष्णु की शरण में गये और इसका समाधान पूछा सबकी प्रार्थना की तो विष्णुजी कहने लगे वृंदा मेरी परम भक्त है, में उसकी आराधना में विध्न नहीं डाल सकता। इस पर सभी देवगणों ने पुनः अनुरोध करते हुए कहां भगवान ! दूसरा और कोई उपाय भी तो नहीं है, अतः कृप्या आप ही हमारी

मदद कर सकते है। इस पर विष्णुजी ने वृंदा की आराधना में विध्न उत्पन्न करने का उपाय निकाला।

जब जालंधर युद्ध पर था और वृंदा इष्ट आराधना में तल्लीन थी तब विष्णुजी जालंधर का वेश धारण कर वृंदा के पास गये । वृंदा ने अपने पति स्वरुप में आये विष्णुजी को देख अपनी इष्ट आराधना पूर्ण कर उनकी सेवा में लग गई। दूसरी और युद्ध में जालंधर की शक्ति क्षीण होने लगी तो, देवताओ ने जलंधर का सिर काट कर उसे मार दिया। जलंधर का कटा सिर उसी के महल में आकर गिरा, जिसे देख वृंदा चौंक गयी और उसके मन में प्रश्न हुवा मेरे पति का सिर तो यहां कटकर पडा है, तो फिर ये मेरे सामने कौन खड़े है? वृंदाने पूछा आप कौन हो जिसकी मेने पति के स्वरुप में सेवा की हैं, उसके प्रश्न के उत्तर में भगवान विष्णु ने अपने स्वरुप में दर्शन दिए। वृंदा अपने साथ हुए छल की सारी बात समझ गई, वृंदा ने क्रोधित होकर भगवान को श्राप दे दिया, आप पत्थर स्वरुप हो जाओ और अपनी पत्नी का वियोग सहो, जिससे भगवान विष्णु तत्क्षण पत्थर (शालिग्राम) के हो गये।

यह देख कर देवलोक में हाहाकार मच गया, मातालक्ष्मी जी यह देख रोने लगीं और वृंदा से प्रार्थना करने लगी। माता लक्ष्मी और देवताओ की विनती पर वृंदा ने भगवान को वापस वैसा ही कर दिया और अपने पति का सिर लेकर वे सती हो गयीं।

उसकी राख से एक पौधा उत्पन्न हुआ तब भगवान विष्णु ने इस पौधे का नाम तुलसी रखा।फिर भगवान बोलें, वृंदा के श्राप स्वरूप पत्थर (शालिग्राम) का विवाह तुलसी के साथ हर साल कार्तिक मास में देव उठनी एकादशी को होगा। मेरे शालिग्राम स्वरुप के साथ तुलसी का पूजन भी समान रुप से होगा। तुलसी विष्णु प्रिय रहेगी । बिना तुलसी मेरी पूजा अपूर्ण होगी।

तभी से हर वर्ष देव उठनी एकादशी को तुलसी और भगवान विष्णु स्वरुप शालिग्राम का विवाह किया जाता है ।

## अन्य कथा

हिंदू धर्म की मान्यताओं के अनुसार कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी अर्थात देवोत्थानी या देवउठनी एकादशी का पर्व मनाया जाता है। हिंदू धर्म की परंपरा के अनुसार इस दिन तुलसी और शालिग्राम का विवाह किया जाता है। शालिग्राम को साक्षात भगवान विष्णु का ही स्वरुप माना जाता है।

पौराणिक की कथा के अनुसार तुलसी और शालिग्राम के विवाह का उल्लेख मिलता हैं जो इस प्रकार है। एक समय में दैत्यों के राजा दंभ हुवा, जो भगवान विष्णु का परम भक्त था। विवाह के बहुत समय बाद भी उसके यहां पुत्र नहीं हुआ, दंभ ने दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य को अपना गुरु बनाकर, उनसे पुत्र प्राप्ति की इच्छा व्यक्त कर उनसे इसका उपाय पुछा। शुक्राचार्य ने उसे पुत्र की कामना हेतु श्रीकृष्ण की विधि-वत आराधना करने का सुझाव दिया। पुत्र प्राप्ति की कामना से दंभ श्रीकृष्ण की आराधना के लिए पुष्कर में जाकर घोर तप करने लगा। दंभ की तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु प्रकट हुए और वर मांगने के लिए कहा, तो उसने पुत्र प्राप्ति की कामना व्यक्ति और भगवान ने उसे पुत्र होने का वरदान दिया।

भगवान विष्णु के आशिर्वाद से दंभ के यहां पुत्र संतान का जन्म हुआ। जिसका नाम शंखचूड़ रखा गया, शंखचूड़ ने बड़े होकर पुष्कर जाकर ब्रह्माजी को प्रसन्न करने के लिए घोर तप किया। शंखचूड़ की तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्माजी प्रकट हुए और वर मांगने को कहा। शंखचूड़ ने वरदान में मांगा कि मैं देवताओं के लिए अजेय हो जाऊं। ब्रह्माजी ने उसे वरदान देकर कहा तुम बदरीवन जाकर, वहां धर्मध्वज की पुत्री तुलसी है, तुम उसके साथ विवाह कर लो।

ब्रह्माजी के कहने पर शंखचूड़ बदरीवन गया। बदरीवन में तपस्या कर रही तुलसी को देखकर शंखचूड़ उसकी और आकर्षित हो गया। तब ब्रह्माजी ने वहां प्रकट होकर उन्होंने दोनों को गंधर्व विवाह करने के लिए कहा। दोनों ने ऐसा ही किया। फिर शंखचूड़ व तुलसी सुख पूर्वक रहने लगे। ब्रह्माजी का वरदान था कि देवता भी शंखचूड़ को हरा नहीं पाएंगे। उसने अपने बल से तीनों लोक पर विजय प्राप्त कर ली।

शंखचूड़ सदैव भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति करता था। देवता के हाथ से स्वर्ग की सत्त निकल जाने पर सब ब्रह्माजी को साथ लेकर भगवान विष्णु के पास

गए। भगवान विष्णु ने कहां शंखचूड़ की मृत्यु भगवान शिव के त्रिशूल से होगी। यह जानकर सभी देवता भगवान शिव के सामने अपना सुझाव लेकर गये। भगवान शिव ने अपने एक गण को दूत बनाकर शंखचूड़ के पास भेजा।

शिवजी के आदेश से शिवगण ने शंखचूड़ को समझाया कि वह देवताओं को उनका राज्य वापस लौटा दे। लेकिन शंखचूड़ ने कहा कि मैं बिना युद्ध के देवताओं को राज्य नहीं लौटाऊंगा। इस अपर भगवान शिव अपनी सेना लेकर शंखचूड़ से युद्ध के लिए निकल पड़े। जिससे देवता व दानवों में युद्ध होने लगा। वरदान के कारण का युद्ध सैकड़ों सालों तक चलता रहा।

अंत में भगवान शिव ने शंखचूड़ का वध करने के लिए अपना त्रिशूल उठाया ही था कि तभी आकाशवाणी हुई जब तक शंखचूड़ के पास में श्रीविष्णु का कवच है और इसकी पत्नी युद्ध के दौरान अविरत आराधना में लगी रहती थी। है, तब तक इसका वध संभव नहीं होगा।

आकाशवाणी सुनकर भगवान विष्णु वृद्ध ब्राह्मण का रूप धारण कर शंखचूड़ के पास जाकर उस्से श्रीविष्णु कवच को दान में मांग लिया। शंखचूड़ ने वह कवच को दान कर दिया। कवच लेकर भगवान विष्णु शंखचूड़ का स्वरूप बनाकर उसकी तुलसी के पास गए। भगवान विष्णु ने तुलसी को विजयी होने की सूचना दी। जिसे सुनकर तुलसी ने अपनी आराधना संपन्न करली, और प्रसन्नता से पति रूप में आए भगवान विष्णु का पूजन कर उनकी सेवा करने लगी। जिसके फलस्वरुप तुलसी के पूजन में भंग हो गया, और शिवजी ने युद्ध में त्रिशूल से शंखचूड़ का वध कर दिया। तुलसी को कुछ समय पश्चात तुलसी को संदेह हुआ कि यह मेरे स्वामी शंखचूड़ नहीं है, तब भगवान भगवान विष्णु ने अपने मूल स्वरूप उपस्थित हुए। शंखचूड़ की पत्नी उसके साथ छल हुआ ज्ञात होते ही रोने लगी। तुलसी ने कहा आपने छलपूर्वक मेरी इष्ट आराधना में विध्न उत्पन्न किया है और मेरे स्वामी को मार दिया। मेरे श्राप से अब आप पत्थर होकर पृथ्वी पर रहेंगे।

तब भगवान विष्णु ने कहा देवी, तुम बहुत तपस्या कर चुकी हो। अब तुम इस शरीर का त्याग दों, और दिव्य देह धारणकर मेरे साथ आन्नद पूर्वक रहो। तुम्हारा यह शरीर नदी रूप में बदल जायेगा और तुम गंडकी नामक नदी के रूप में प्रसिद्ध प्राप्त होगी। तुम पुष्पों में श्रेष्ठ तुलसी बन जाओगी और सदा मेरी प्रिय होकर मेरे साथ रहोगी। तुम्हारे श्राप को सत्य करने के लिए मैं पत्थर (शालिग्राम) बनकर पृथ्वी रहूंगा। गंडकी नदी के तट पर मेरा वास होगा। और नदी में रहने वाले असंख्य कीड़े पत्थर में मेरे चक्र चिह्न का निर्माण करेंगे। शायद तब से तुलसी व शालिग्राम के विवाह की परंपरा रही हो!

# सर्व कार्य सिद्धि कवच



जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

**कवच के प्रमुख लाभ**: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

# तुलसी सेवन करें लेकिन सावधानी के साथ !

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

हिन्दू धर्म में तुलसी के पौधे को पवित्र माना जाता है। माना जाता है कि जिस घर के आंगन में तुलसी का पौधा लगा होता हैं उस घर से कलह और दरिद्रता दूर होजाते हैं। धर्मग्रंथों में तुलसी को हरि प्रिया कहा गया हैं। पुराणों में भी भगवान विष्णु और तुलसी के विवाह का वर्णन मिलता हैं।

आयुर्वेद शास्त्र के अनुशार तुलसी को संजीवनी बूटी भी कहा जाता है। क्योकि तुलसी के पौधे में अनेको औषधीय गुण पाये जाते हैं। तुलसी का सेवन कफ द्वारा पैदा होने वाले रोगों से बचाने वाला और शरीर कि रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने वाला माना गया हैं। इसलिए तुलसी के पत्तों का सेवन करना लाभकारी होता हैं।



हमारे शास्त्रों में तुलसी के पत्तों का उचित तरीके से सेवन करने का वर्णन किया गया हैं। जिसका पालन न करने पर यही तुलसी के पत्ते का सेवन हानिकारक भी हो सकते हैं।

तुलसी सेवन का शास्त्रोक्त तरीका हैं कि जब भी तुलसी के पत्ते मुंह में रखें, उन्हें दांतों से न चबाकर सीधे ही निगल लेने चाहिये।

इसका विज्ञान कारण हैं, कि तुलसी के पत्तों में पारा (धातु) के अंश होते हैं। जिस कारण तुलसी चबाने पर बाहर निकलकर दांतों कि सुरक्षा परत को नुकसान पहुंचाते हैं। जिससे दंत और मुख रोग होने का खतरा बढ़ जाता है।

यदि तुलसी के पत्ते चबाकर खाने कि आत्याधिक आवश्यकता होतो, तुलसी सेवन के पश्चयात तुरंत कुल्ला कर लें। क्योकि इसका अम्ल दांतों के एनेमल को खराब कर देता हैं।

इसलिए ध्यान रहे कि विष्णुप्रिया की आराधना कर धर्म लाभ तो पाएं लेकिन उसका सेवन सावधानी से कर स्वास्थ्य लाभ भी पाएं।

## तुलसी के प्रकार:

तुलसी दो तरह की होती है। काली तुलसी व कपूर तुलसी (बेल तुलसी)

## तुलसी सेवन के लाभ

- तुलसी भोजन को शुद्ध करने वाला माना जाता हैं, इसी कारण ग्रहण लगने के पूर्व भोजन में डाला जाता हैं जिससे सूर्य या चंद्र कि विकृत किरणों का कुप्रभाव भोजन पर न पडे।
- तुलसी के पत्तो को मृत व्यक्ति के मुख में डाला जाता हैं, धार्मिक मत के अनुसार उस व्यक्ति को मोक्ष कि प्राप्ति होती हैं।
- तुलसी रक्त कि कमी के लिए रामबाण हैं। तुलसी के नियमित सेवन से हीमोग्लोबीन तेजी से बढ़ता हैं, शारीर कि स्फूर्ति बनी रहती हैं।
- तुलसी के सेवन से अस्थि भंग(टूटी हड्डियां) शीघ्रता से जुड़ जाती हैं।
- गृह निर्माण के समय नींव में घड़े में हल्दी से रंगे कपड़े में तुलसी कि जड़ रखने से भवन पर बिजली गिरने का डर नहीं होता।
- तुलसी कि सेवा करने वाले व्यक्ति को कभी चर्म रोग नहीं, चर्म रोग हैं तो उसमें सुधार होता हैं।

## उपयोग में सावधानी बरतें-

- तुलसी कि प्रकृति गर्म हैं, शरीर से गर्मी निकालने के लिये। तुलसी को दही या छाछ के साथ सेवन करने से, उष्ण गुण हल्के हो जाते हैं।

- तुलसी संध्या एवं रात्री में नहीं तोड़ें, एका करने से शरीर में विकार उत्पन्न होते हैं। क्योकि अंधेरे में तुलसी से उठने वाली विद्युत तरंगे तीव्र हो जाती हैं।
- तुलसी के सेवन के बाद दूध पीने से चर्म रोग होता हैं।
- तुलसी के साथ दूध, नमक, प्याज, लहसुन, मूली, मांसाहार, खट्टे पदार्थ सेवन करना हानिकारक होता हैं।
- तुलसी के पत्ते दांतो से चबाकर ना खायें, अगर खायें हैं तो तुरंत कुल्लाकर लें। कारण इसका अम्ल दांतों के एनेमल को खराब कर देता है।



## तुलसी सेवन का तरीका

- तुलसी के प्रातः खाली पेट सेवन से अत्याधिक लाभ प्राप्त होता है।
- तुलसी के पत्तों को या किसी भी अंग को सुखाना हो तो केवल छाया में सुखाएं। धुप में सुखाने से तुलसी के गुणों में कमी आती हैं।
- तुलसी के फायदे को देखते हुए एक साथ अधिक मात्रा में सेवन करना हानिकारक होता हैं।

## अन्य लाभ

- तुलसी की माला धारण करने वाले व्यक्ति को टांसिल में लाभ होता।
- स्त्री रोग- मासिक धर्म, श्वेत प्रदर यदि मासिक धर्म ठीक से नहीं आता तो एक ग्लास पानी में तुलसी बीज को उबाले, आधा रह जाए तो इस काढ़े को पी जाएं, मासिक धर्म खुलकर होगा।
- मासिक धर्म के दौरान यदि कमर में दर्द भी हो रहा हो तो एक चम्मच तुलसी का रस सेवन करें।
- तुलसी का रस 10 ग्राम चावल के उबले पानी के साथ सात दिन पीने से प्रदर रोग ठीक होगा। इस दौरान दूध भात ही सेवन करें।
- तुलसी के बीज पानी में रातभर भिगो दें। सुबह मसलकर छानकर मिश्री के मिलाकर सेवन करें, प्रदर रोग ठीक होता हैं।
- तुलसी के रस में शहद मिलाकर नियमित कुछ दिनों तक सेवन करने से स्मरण शक्ति बढ़ती हैं।
- तुलसी के पत्तों का दो तीन चम्मच रस प्रातःकाल खाली पेट सेवन करने से स्मरण शक्ति बढ़ती है।
- तुलसी कि पिसी पत्तियों में एक चम्मच शहद मिलाकर नित्य एक बार सेवन कर ने से शरीर निरोगी रहता हैं, चहरे पर चमक आती हैं।पानी में तुलसी के पत्ते डालकर भिगोकर रखने से एवं यह पानीका सेवन करने से यह टॉनिक का काम करता हैं।

# क्या मंगली दोष वाले जातक थोड़े गुस्सैल व चिड़चिड़े होते हैं?

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

जन्म कुंडली में मंगली होना अथवा मंगल दोष होना किसी जातक के लिये अमंगलकारी नहीं हैं। मंगली होना कोई दोष नहीं हैं यह एक विशेष योग होता हैं जो कुछ विषेश जन्म कुंडली में पायेजाते हैं। मंगली जातक कुछ विशेष गुण लिये हुवे प्रतिभा संपन्न होते हैं। हमारा उद्देश्य यहा मंगल दोष के प्रभाव को नकारना नहीं हैं, उस्से जुडे भ्रम को दूर कर, उस्से जुडे शास्त्रीय नियमो से आपको परिचित करना और उसके निवारण के उपाय बताना हैं।

## मंगली-दोष विचार कैसे किया जाता हैं। इस्से जुडे शास्त्रोक्त नियम इस प्रकार हैं।

**अगस्त्य संहिता के अनुसार:**

धने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
भार्या भर्तु विनाशाय भर्तुश्च स्त्री विनाशनम्॥

**मानसागरी के अनुसार:**

धने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
कन्या भर्तुविनाशाय भर्तुः कन्या विनश्यति॥

**बृहत् ज्योतिषसार के अनुसार:**

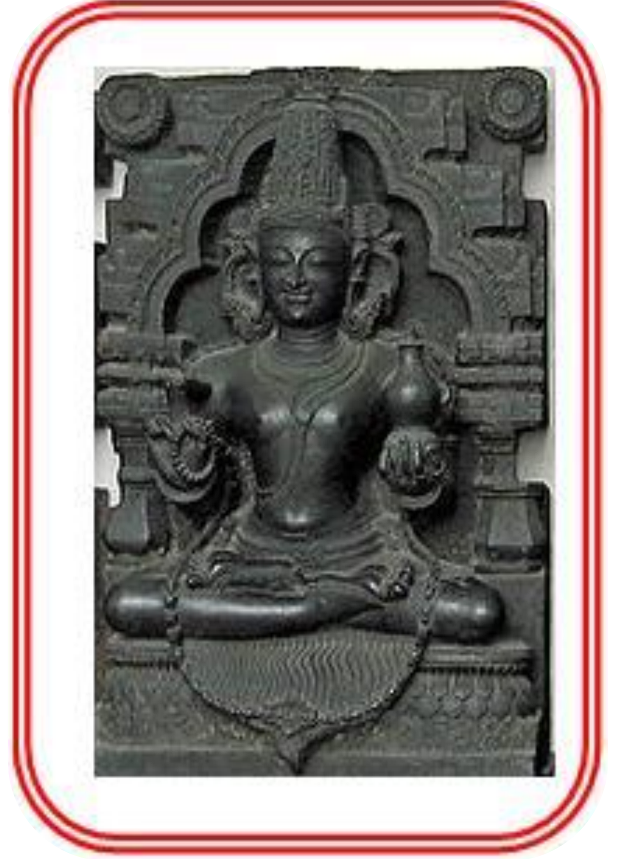
लग्ने व्यये चतुर्थे च सप्तमे वा अष्टमे कुजः।
भर्तारं नाशयेद् भार्या भर्ताभार्या विनाश्येत्॥

**भावदीपिका के अनुसार:**

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्रीणां भर्तु विनाशः स्यात् पुंसां भार्या विनश्यति॥

**बृहत् पाराशर होरा के अनुसार:**

लग्ने व्यये सुखे वापि सप्तमे वा अष्टमे कुजे।
शुभ दृग् योग हीने च पतिं हन्ति न संशयम्॥



उपरोक्त श्लोकों का भावार्थ है कि जन्म लग्न से प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम या द्वादश स्थान मे मंगल स्थित होने पर मंगल दोष या कुज दोष बनता हैं। कुछ आचार्यो के अनुसार लग्न के अतिरिक्त मंगली दोष चन्द्र लग्न, शुक्र या सप्तमेश से इन्हीं स्थानो में मंगल स्थित होने पर भी होता हैं।

# मंगली दोष का फल

मंगली दोष वैवाहिक जीवन को विभिन्न प्रकार से प्रभावित करता है - विवाह मे विघ्न, विलम्ब, व्यवधान या धोखा, विवाहोपरान्त दम्पति मे से किसी एक अथवा दोनाको शारीरिक, मानसिक अथवा आर्थिक कष्ट, पारस्परिक मन-मुटाव, वाद-विवाद तथा विवाह-विच्छेद। अगर दोष अत्यधिक प्रबल हुआ तो दोना अथवा किसी एक की मृत्यु भी हो सकती है।

कुंडली में यदि मंगली दोष हो तो उस्से भयभीत या आतंकित नहीं होना चाहिये। प्रयास यह करना चाहिये कि मंगली जातक का विवाह मंगली जातक से ही हो क्याकि मंगल-दोष साम्य होने से वह प्रभावहीन हो जाता हैं तथा दोनासुखी रहते हैं।



*दम्पत्योर्जन्मकाले व्ययधनहिबुके सप्तमे लग्नरन्ध्रे।*
*लग्नाच्चन्द्राच्च शुक्रादपि भवति यदा भूमिपुत्रो द्वयोर्वै॥*
*तत्साम्यात्पुत्रमित्रप्रचुरधनपतां दंपती दीर्घ-काला।*
*जीवेतामेकहा न भवति मश्तिरिति प्राहुरत्रात्रिमुख्याः॥*

**अर्थातः** यदि वर और कन्या के जन्मांग मे मंगल द्वितीय, द्वादश, चतुर्थ, सप्तम अथवा अष्टम भाव मे लग्न, चंद्रमा अथवा शुक्र से समभाव मे स्थित हो तो समता का मंगल दोष होने के कारण वह प्रभावहीन हो जाता है। परस्पर सुख, धनधान्य, संतति, स्वास्थ्य एवं मित्रादि की उपलब्धि होती हैं।

*कुज दोष वत्ती देया कुजदोषवते किल।*
*नास्ति दोषो न चानिष्टं दम्पत्यो सुखवर्धनम्॥*

**अर्थातः** मंगल दोष वाली कन्या का विवाह मंगल दोष वाले वर के साथ करने से मंगल का अनिष्ट दोष नहीं होता तथा वर-वधू के मध्य दांपत्य-सुख बढ़ता है।

❖ मंगल के प्रभाव वाले जाताक आकर्षक, तेजस्वी, चिड़चिड़े स्वाभाव, समस्याओं से लडऩे की शक्ति विशेष रूप से प्रभावमान होता हैं। विकट से विकट समस्याओं में घिरे होने के बावजूद जातक अपना धैर्य नहीं छोड़ते हैं। ज्योतिष ग्रथो में मंगल को भले ही क्रूर ग्रह बताया गया हैं, मंगल केवल अमंगलकारी हि नहीं हैं यह मंगलकारी भी होता हैं।

# मंगल कि उत्पत्ती कैसे हुइ?

शास्त्रों में मंगल ग्रह कि उत्पत्ति शिव से मानी गई हैं। मंगल को पृथ्वी का पुत्र माना गया हैं। मंगल की उत्पत्ति भारत के मध्यप्रदेश के उज्जैन में मानी गई हैं।

- जेसे मंगल का रंग लाल या सिंदूर के रंगके समान हैं।,

इस लिये भगवान गणेश को भी सिंदूर चढाया जाता हैं। इस लिये गणेशजी को मंगलनाथ या मंगलमूर्ति भी कहाजाता हैं।

- मंगल कुमार को गणेशजी नें मंगलवार के दिन दर्शन देकर उनहे मंगल ग्रह होने का वरदान दिया था इसी के कारण ही भगवान गणेश को मंगल मूर्ति कहा जाता हैं और मंगलवार के दिन मंगलमूर्ति गणेश का पूजन किया जाता हैं।
- विद्वानो ने देवी महाकाली जी का पूजन भी मंगलवार को श्रेष्ठ फल देने वाला माना हैं।
- ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मंगल का प्रभाव मनुष्य के रक्त और मज्जा पर होता है। इसी से मंगली कुंडली वाले जातक थोड़े गुस्सैल और चिड़चिड़े स्वभाव के होते हैं।

# मंगली होने के लाभ

मंगली कुंडली वाले जातक में अपनी जिम्मेदारी को पूर्ण निष्ठा से निभाने का विशेष गुण होता हैं। मंगली व्यक्ति ज्यादातर कठिन से कठिन कार्य को समय से पूर्व ही कर लेने समर्थ होते हैं। एसे व्यक्ति में नेतृत्व करने की क्षमता जन्मजात पाई जाती हैं। एसे व्यक्ति जल्द किसी से मित्रता नहीं करते और जल्द किसी से घुलते-मिलते नहीं हैं। एसे व्यक्ति जब मित्र या या संबंध बनाते हैं तो पूर्णत: निभा ने का प्रयास अवस्य करते हैं।

एसे व्यक्ति अत्याधिक महत्वाकांक्षी होने के कारण इनके स्वभाव में क्रोध पाया जाता हैं। एसे व्यक्ति उग्र स्वभाव के होने पर भी वह बहुत दयालु, शीध्र क्षमा करने वाले तथा मानवतावादी होते हैं।

एसे व्यक्ति सहीं को सहीं और गलत को गलत कहने में नहीं हिचकिचाते। व्यक्ति किसी गलत के आगे झुकते नहीं और खुद भी गलत नहीं करते। किसी कि खुशामत करना इन्हें ज्यादा रास नाहीं आता। मंगली जातक प्रायः व्यवसायी, उच्च पद आसीत, राजनीति, डॉक्टर, इंजीनियर, अभिभाषक, तंत्र का जानकार और सभी क्षेत्रों में इन्हें विशेष योग्यता प्राप्त होती हैं। व्यक्ति विपरित लिंग के प्रति विशेष संवेदनशील होते हैं उनकी और विशेष झुकाव रखते हैं।

ज्योतिष शास्त्रों के अनुशार मंगली लडके-लडकी अपने जीवन साथी से विशेष अपेक्षाएं रखते हैं और अपने जीवन साथी के मामले में अधिक संवेदनशील होते हैं। इस कारण शास्त्रों में मंगली का विवाह मंगली से ही करने पर जोर दिया गया हैं। कुछ विद्वानो का मत हैं कि लड़के की कुंडली में मंगल हो और लड़की की कुंडली में 1, 4, 7, 8, 12 स्थान में शनि स्थित हो अथवा मंगल के साथ गुरु स्थित हो तब मंगल का प्रभाव समाप्त माना जाता हैं। एसा माना जाता हैं कि मंगली जातक का विवाह विलंब से होता हैं और अच्छी जगह होता हैं।

**इसी लिये मंगली कुंडली वाले व्यक्ति का विवाह मंगली से करना शुभ माना जाता हैं।**

**ज्योतिष महत्व:** ज्योतिष में मंगल ऋण, भूमि, भवन, मकान, झगड़ा, पेट की बीमारी, क्रोध, मुकदमे बाजी और भाई का कारक होता हैं। मंगल हमें साहस, सहिष्णुता, धैर्य, कठिन, परिस्थितियों एवं समस्याओं को हल करने की योग्यता प्रदान करता हैं और खतरों से सामना करने की शक्ति देता हैं।

**मंगल के शांति के उपाय:**

भगवान शिव और गणेश की उपासना करें। तांबा, सोना, गेहूं, लाल वस्त्र, लाल चंदन, लाल फूल, केसर, कस्तुरी, लाल बैल, मसूर की दाल, भूमि आदि का दान करें और ज्योतिष की सलाह पर मूंगा रत्न धारण करें।

# माला संस्कार

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

विशुद्ध निर्दोष उपयुक्त माला की प्राप्ति के बाद या माला का विधिवत निर्माण कार्य संपन्न हो जानेके पश्चयात मालाका संस्कार अवश्य करना या करवा लेना चाहिये।

*कांस्य थाल्यां वर्गाकारेणाष्टाश्वत्थ पत्राणि उत्तानानि डण्ठलानिमध्यगतानि पत्रामेकं मध्येस्थाप्य तस्योपरि पर हस्तग्रंथितां माला निधाय कुशोदकेन पंचगव्येन च पंचाशन्मातृकाक्षैः प्रक्षालयेत्।*

**अर्थातः** कांसे की थाली में पीपल के नौ पत्तों को लेकर आठ पत्तों से अष्टदल कमल जैसा बनाए। एक पत्ता मध्य भाग में रखें। उस पर माला रखे अं आं इत्यादि सं हं पर्यन्त श्लोको का जाप कर दूध, दही, घी, आदि पंचगव्य से स्नान कराकर पुनः शुद्ध जल से स्नान कराएं।

**आपके मार्गदर्शन के लिए स्वर एवं व्यंजन को दर्शाया जा रहा हैं।**

*"ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं"*

उच्चारण हो जाने के बाद में पंचगव्य से माला का प्रक्षालन करें, तथा "सद्योजात" मन्त्र पढ़कर उसे शुद्ध जल से धो लें ।

**सद्योजात मन्त्र:**

***ॐ सद्यो जातं प्रपद्यामि सद्यो जाताय वै नमो नमः।***
***भवे भवे नाति भवे भवस्य मां भवोद्भवाय नमः॥***

तत् पश्चात् वामदेव मन्त्र से चन्दन लेपन करें।

**वामदेव मन्त्र:**

***ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः***
***कल विकरणाय नमो बलविकरणाय नमः।***
***बलाय नमो बल प्रमथाय नमः सर्व भूत दमनाय नमो मनोन्मनाय नमः।***

तत् पश्चात् अघोर मन्त्र से धूपदान करें।

## अघोर मन्त्र:

***ॐ अघोरेभ्यो ऽथोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्यः।***
***सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररुपेभ्यः॥***

तत् पश्चात् एक-एक मनके पर सौ-सौ बार ईशान मन्त्र का जप करें।

## ईशान मन्त्र:

***ॐ ईशानः सर्व विद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रहमाधिपति।***
***ब्रहमणोऽधिपति ब्रहमा शिवो मे अस्तु सदा शिवोम॥***

फिर माला में अपने इष्ट देवता की प्राण-प्रतिष्ठा कर प्रार्थना करें।

***माले माले महामाले सर्व तत्व स्वरुपिणी।***
***चतुर्वस्त्वयी-न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धि दाभवः॥***

## सावधानि:

- मन्त्र जप के दौरान माला फेरते समय न तो स्वयं हिले और न माला को हिलाए।
- माला फेरते समय मौन रहे अनावश्यक बाते या शब्दों का उच्चारण न करें।
- माला फेरते समय माला को हाथ से गिरने ना दें।
- माला का धागा घिस गया हो, तो शुभ दिन में नये धागे में पिरोले।
- माला फेरते समय तर्जनी का स्पर्श न हो इस बात का ध्यान रखें। +
- विशेष अनुष्ठानो में प्रयोग होने वाली माला को गुप्त स्थान रखना चाहिये।

- माला से यदि दाना टूट जाय अथवा मनके खो जाय तो दूसरी ऐसी ही माला के मनके मिकाल कर टूटी हुई माला में मिलादेने चाहिए ।
- मन्त्र जप हमेशा एक ही माला से करने चाहिए, क्योंकि जिस माला पर जप करते हैं वह माला अत्यंत चैतन्ययुक्त एवं प्रभावशाली होने लगती हैं।
- विद्वानो का मत हैं निरंतर एक ही माला पर मन्त्र जपने से माला एवं मन्त्र दोनो का प्रभाव बढ़ने लगता हैं।
- माला को हमेशा स्वच्छ कपड़े से ढ़ाँककर या गौमुखी में माला रखकर जप करना चाहिए। मन्त्र जप हेतु गौमुखी को सर्वोत्तम व सुविधाजनक माना जाता हैं।
- मन्त्र के जप हेतु प्रयोग की जाने वाली माला शरीर के अशुद्ध अंगों से स्पर्श नहीं करे इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए। (शरीर में नाभि के नीचे के अंगो को अशुद्ध माना जाता हैं)
- इस लिए मन्त्र जप करते समय माला नाभि से नीचे नहीं लेजानी चहिए।
- माला भूमि से स्पर्श नहीं करे इसका भी ध्यान रखे।
- अशुद्ध अवस्था में स्त्रियों द्वारा स्पर्श नहीं हो इसका भी ध्यान रखे।
- यदि किसी कारण वश माला अशुद्ध हो जाए तो माला का पुनः शुद्धि करण एवं पूजन संस्कार करना चाहिए।

मन्त्र जप के दौरान यदि प्रमादवश माला हाथ गिर जाये तो अग्निपुराण के अनुशार मंत्र का दो सौ बार जप करना चाहिए।

*प्रामादात्पतिते सूत्रे जप्तव्यं तु शतद्वयम्।*

(अग्निपुराण: 3.28.5)

*अष्टोत्तारशतं नित्यमष्टाविंशतिरेव वा।*
*विधिनादशकं वापि त्रिकालेषुजपेद्बुधाः।*

(वेद व्यास)

**अर्थातः** प्रतिदिन 108, 28 अथवा कम से कम 10 बार तीनों काल में जप करे।

# वास्तु एवं रोग

संकलन गुरुत्व कार्यालय

**भवन के उत्तर-पश्चिम भाग(वायव्य कोण) का संबंध वायु तत्त्व के साथ होता हैं।**

वायु का प्राण के साथ संबंध हैं। इस लिये भवन के वायव्य कोण के ज्यादा से ज्यादा स्थानको खुल्ला राखना चाहिये। इस कोने में भारी सामन नहिं रखना चाहिये या भारी भवन का निर्माण नहिं करना चाहिये अन्यथा श्वास से संबंधित परेशानी, वायुविकार तथा मानसिक रोग होने कि संभावना अधिक बढ़ जाती हैं।'=

जिस भवन के वायव्य कोण कि सतह उत्तर-पूर्व कि सतह से थोडी ऊचाई पर एवं दक्षिण-पश्चिम कि सतहसेथोडीनीचीहो वह भवन निवास हेतु शुभ होता हैं।

जिस भवन में उत्तर दिशा कि जगह अधिक होतो परिवार में महिला वर्ग में त्वचा संबंधी रोग एक्झिमा, एलर्जी इत्यादि होने का खतरा बढ जाता हैं।

यदि भवन के पश्चिम में जगह उत्तर से अधिक होतो पुरुष वर्ग के लिये शारीरिक कष्ट होने का खतरा बढ जाता हैं।

**भवन के उत्तर-पूर्व (ईशान कोण) का संबंध जल तत्त्व के साथ होता हैं।**

जिस भवन का ईशान कोण भारी हो तो भवन में रेहने वाले लोगो के शरीर में जल तत्व के असंतुलन के कारण विभिन्न प्रकार के रोग एवं परेशानियां उतपन्न होती हैं।

यदि भवन का ईशान कोणजितना होसके खुला एवं हलका रखा जाये उतना शुभ होता हैं।

यदि भवन में ईशान कोण में रसोई घर होतो घरके सदस्यो में पेट से संबंधित रोग एवं परिवार के सदस्यो के बिचमें तनाव होता हैं।

ईशान कोण में भूमिगत जल भंडार या घरमें आनेवाले पानी कि लाइन इस दिशा मे होतो अति उत्तम होता हैं।

यदि ईशान कोण से पूर्वनुं का भाग ऊंचा होय तो परिवार में पुरुषो के स्वास्थ्य पर खराब असर होता हैं।

यदि घरमें बीमारी घर कर गई होतो रोगी को घर के ईशान कोण कि और मुख करके दवाई का सेवन कराने से रोग जल्द थीक होजाता हैं।

यदि भवन का ईशान कोण कटा हो तो भवन में निवास करने वाले लोग रक्त-विकार एवं यौन रोग हो सकता हैं एवं व्यक्ति कि प्रजनन क्षमता कमजोर होसकती हैं।

यदि ईशान कोण से उत्तर का भाग ऊंचा होय तो परिवार में स्त्री वर्ग का स्वास्थ्य पर खराब असर होता हैं।

**भवन के पूर्वी-दक्षिण (अग्नि कोण) का संबंध अग्नि तत्व के साथ होता हैं।**

जिस भवन के अग्नि कोण में रसोई घरको वास्तु कि द्रष्टि से शुभ मानागया हैं।

जिस भवन के अग्नि कोण में जल भंडार या स्त्रोत हो वहा निवास करने वाले उदर रोग एवं पित्त विकार होने कि संभावना होती हैं।

भवन के दक्षिण-पूर्व दिशामे यदि दक्षिण का स्थान ज्यादा होतो परिवार के पुरुष सदस्यो में मानसिक परेशानी होती हैं।

**वास्तुशास्त्र के अनुसार भवन का केन्द्र स्थान(ब्रह्म स्थान) को ज्यदा महत्व हिया गया हैं।**

जो वास्तु में आकाश तत्त्व से संबंध रखता हैं। इस लिये इस स्थान को यथा संभव खाली रखना आवश्यक हैं जिस्से परिवार के लोगो का स्वाश्थ्य उत्तम होता हैं एवं परिवार का विकास शीघ्र होता हैं।

भवन के ब्रह्म स्थान पर किसी भी प्रकार कि अस्वच्छता होने से परिवार के सदस्यो के स्वास्थ्य पर बुरा असर देखा गया हैं।

भवन के ब्रह्म स्थान पर शौचालय, पगथियां (सीडी), गटर, सेफ्टी टेन्क आदि होने से सदस्यो में कान कि परेशानी, बदनामी, धन हानि एवं परिवार के विकास में रुकावट होते देखा गया हैं।

# रत्नों का अद्भुत रहस्य

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

गतांक से आगे...

## पुखराज

बृहस्पति (गुरु) का रत्न पुखराज गुरु ग्रह के शुभ फलों की प्राप्ति हेतु धारण किया जाता हैं। पुखराज को गुरु का रत्न माना गया है। पुखराज एक बहुमूल्य रत्न हैं।

**हिन्दी मे :-** पुखराज

**सस्कृत मे :-** पुष्पराज, गुरुरत्न, गुरु वल्लभ, पुष्पराग, पीतमणि, पीतरक्त मणि, वाचस्पति-वल्लभ आदि नाम से जाना जाता हैं।

**फ़ारसी मे :-** याकूत

**अंग्रेजी :-** सेफायर

## प्राप्ति स्थान:

जानकारो के मत से पुखराज का प्राप्ति स्थान भारत में आसाम, अन्य देशो में बर्मा, सीलोन, तुर्किस्तान, ईरान, ब्राज़ील, यूराल आदि देशो से पुखराज प्राप्त होते हैं। अंतराष्ट्रिय बाजारों में सीलोन व बर्मा के पुखराज की मांग सबसे अधिक मानी जाती हैं।

पुखराज रत्न को विद्वान ग्रंथकारो नें सभी रत्नों का राजा हैं। पुखराज पीले, सफ़ेद और नीले रंगों का होता हैं। एसी मान्यता हैं की फूलो के जितने रंग होते हैं, पुखराज भी उतने ही रंग में पाया जाता हैं। पीले रंग का पुखराज सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

स्वर्णमय आभायुक्त स्वच्छ, पारदर्शक और वजनदार पुखराज दुर्लभ माना जाता हैं।

विद्वानो के मत से उत्तम पुखराज धारण करने वाले को मनसिक शान्ति, धन की प्राप्ति, स्वास्थ्य लाभ, दिर्घायु, मान-सम्मान, बुद्धि-बल की वृद्धि होती हैं एवं दौलत-शोहरत प्राप्त होती हैं व्यक्ति की प्रतिष्ठा निरंतर बढती हैं। पौराणिक मान्यताके अनुशार यदि किसी विषैले कीड़े ने काटा हो, उस स्थान पर असली पुखराज घिस कर लगाने से विष का प्रभाव उतर जाता हैं।

## पुखराज के लाभ

- पुखराज धारण करने से कन्याओं को वैवाहिक सुख शीध्र प्राप्त होता हैं एवं पूर्ण वैवाहिक सुख प्राप्त होता हैं।
- बृहस्पति को पुत्र संतान कारक माना गया है, अतः पुखराज धारण करने पुत्र संतान की प्राप्ति होती हैं।
- धर्म-कर्म व आध्यात्मिक उन्नति हेतु पुखराज धारण करना अत्यंत लाभदायक होता हैं।
- पुखराज धारण करने से भूत-प्रेत आदि आसुरी बाधाओं का निवारण होता हैं।
- पुखराज को धारण करने से वाणी सम्बन्धी दोष दूर होते हैं एवं गले की पीड़ा से राहत मिलती हैं।
- पुखराज पीलिया, तिल्ली, पांडू रोग, खांसी, दन्त रोग, अल्सर, सन्निपात, मुख की दुर्गन्ध, बवासीर, मन्दाग्नि, पित्त-ज्वरादि आदि कई प्रकार के रोगों के ईलाज के लिए प्रयोग किया जाता रहा हैं।
- विद्वान ज्योतिषीयों के मतानुसार यदि किसी कन्या की शादी में विघ्न-बाधा आ रही हो उसे पुखराज धारण कराने से विवाह में बाधा उत्पन्न करने वाले अशुभ योगो का अंत हो जाता हैं अर्थात कन्या की शादी जल्दी हो जाती हैं।

- गुरु ग्रह को जीवनदाता माना गया हैं। गुरु वसा एवं ग्रंथियों से सीधा संबंध रखता है। इस लिये गला रोग, सीने का दर्द, श्वास रोग, वायु विकार, टीबी, हृदय रोग में पुखराज धारण करने से लाभप्रद होता है।
- पुखराज पाँच रंगों में पाया जाता है- हल्दी रंग में, केशर/केशरिया, नीबू के छिलके के रंग का, स्वर्ण के रंग का तथा सफेद-पीली झाँई वाला।
- गुरू का रत्न पुखराज हैं। पीले रंग का पुखराज मोटापे को नियंत्रित करने के लिए उत्तम रत्न हैं एवं जिस व्यक्ति का स्वास्थ्य दुर्बल रहता हों, उन्हें अपनी सेहत में सुधार के लिए पुखराज धारण करना भी लाभप्रद होता हैं। पुखराज धारण करने से रक्तचाप नियंत्रित रहता हैं।

## मान्यता:

उत्तम पुखराज वहं हैं जो स्पर्श करन से चिकना लगे, जो हाथ में लेने पर उसका वजन कुछ भारी लगे, जो पारदर्शी हो, जो प्राकृतिक चमक से युक्त हो।

पुखराज को चौबीस घन्टे कच्चे दूध में डूबां कर रखने के बाद यदि उसकी चमक फीकी न पड़े तो समझे पुखराज असली हैं।

***पुष्परागं गुरु स्वच्छं स्निग्धं स्थूलं समं मृदु ।***
***कर्णिकार प्रसूनाभं मसृणं शुभमष्टधा॥***

(रसरत्नसमुच्चय अध्याय-४.२४)

**अर्थात:** जो पुखराज हाथ पर रखने से वजनी (अर्थात: गुरु) हो, देखने में स्निग्ध हो, दाग-धब्बे रहित स्वच्छ हो, आकार में बडा (अर्थात: स्थूल) हो, परत रहित (अर्थात: सम) हो, छूने में मुलायम हो, खिले हुए पीले कण्डिर के फूल के समान आभा हो, कसौटी पर घिसने से रंग और बढा हुवा दिखाई हो एसा पुखराज श्रेष्ठ होता हैं।

***निष्प्रभं कर्कशं रूक्षं पीतं श्यामं नतोन्नतम् ।***
***कपिशं कपिलं पाण्डु पुष्परागं परित्यजेत् ।। रस-४.२५ ।।***

## पुखराज के दोष:

- दुधिये रंग का पुखराज धारण करने से शरीर पर शस्त्रधात, चोट आदि की आशंकाओं को बढाता हैं।
- जिस पुखराज में चीर- सीधी धारी या लकीर दिखे एसे पुखराज को धारण करने से बंधु-बाँधवों से विरोध उत्पन्न करवाता हैं।
- जिस पुखराज सुन्न हो अर्थात चमकरहित उसे धारण करने से धारण करने वाले के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता हैं।
- जिस पुखराज में लाल रंग के छींटे या धब्बे हो एसे पुखराज को धारण करने से धनधान्य नाशक होता हैं।
- जिस पुखराज में काले रंग के छींटे या धब्बे हो एसे पुखराज को धारण करने से गृहस्थजीवन के लिये नुक्शानदाय सिद्ध होता हैं।
- जिस पुखराज में खड्डा दिखाई देता हो, एसे पुखराज को धारण करने से धन-संपत्ति को नष्ट करने वाला होता हैं।
- जिस पुखराज में जाले दिखाई देता हो, एसे पुखराज को धारण करने से संतान सुख के लिए हानिकारक माना जाता हैं।
- जिस पुखराज में दो रंग हो वह रोग वृद्धि करने वाला माना गया हैं।
- दोषयुक्त पुखराज लाभ के स्थान पर हानि कारता हैं।

>> क्रमशः अगले अंक में ...

***

# मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री

| | |
|---|---|
| काली हल्दी:- 370, 550, 730, 1450, 1900 | कमल गट्टे की माला - Rs- 370 |
| माया जाल- Rs- 251, 551, 751 | हल्दी माला - Rs- 280 |
| धन वृद्धि हकीक सेट Rs-280 (काली हल्दी के साथ Rs-550) | तुलसी माला - Rs- 190, 280, 370, 460 |
| घोडे की नाल- Rs.351, 551, 751 | नवरत्न माला- Rs- 1050, 1900, 2800, 3700 & Above |
| हकीक: 11 नंग-Rs-190, 21 नंग Rs-370 | नवरंगी हकीक माला Rs- 280, 460, 730 |
| लघु श्रीफल: 1 नंग-Rs-21, 11 नंग-Rs-190 | हकीक माला (सात रंग) Rs- 280, 460, 730, 910 |
| नाग केशर: 11 ग्राम, Rs-145 | मूंगे की माला Rs- 190, 280, Real -1050, 1900 & Above |
| स्फटिक माला- Rs- 235, 280, 460, 730, DC 1050, 1250 | पारद माला Rs- 1450, 1900, 2800 & Above |
| सफेद चंदन माला - Rs- 460, 640, 910 | वैजयंती माला Rs- 190, 280, 460 |
| रक्त (लाल) चंदन - Rs- 370, 550, | रुद्राक्ष माला: 190, 280, 460, 730, 1050, 1450 |
| मोती माला- Rs- 460, 730, 1250, 1450 & Above | विधुत माला - Rs- 190, 280 |
| कामिया सिंदूर- Rs- 460, 730, 1050, 1450, & Above | मूल्य में अंतर छोटे से बड़े आकार के कारण हैं। >> Shop Online \| Order Now |

# मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मे समाई अद्रितिय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है।

>> Shop Online | Order Now

**गुरुत्व कार्यालय** मे विभिन्न आकार के "श्री यंत्र" उप्लब्ध है

**मूल्य:- प्रति ग्राम** Rs. **28.00 से** Rs.**100.00**

GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call Us: 91 + 9338213418, 91 + 9238328785,
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

# प्रकृति की अलौकिक देन रुद्राक्ष धारण करने से लाभ

संकलन गुरुत्व कार्यालय

गतांक से आगे...

## पंच मुखी रुद्राक्ष:



- पंच मुखी रुद्राक्ष साक्षात कालाग्नि का स्वरुप हैं।
- पंच मुखी रुद्राक्ष धारण करने से सभी प्रकार के अनिष्ट एवं कश्टो से मुक्ति मिलती हैं।
- पंच मुखी रुद्राक्ष मनोवांचित फल प्राप्त करने हेतु उत्तम हैं।
- पंचमुखी रुद्राक्ष धारण करने से सुख-शांति प्राप्त होती हैं।
- पंच मुखी रुद्राक्ष शत्रु भय से रक्षा करने के लिए भी लाभदायक मानाजाता हैं।
- पंच मुखी रुद्राक्ष धारण करने से जहरीले जीव-जंतुओं से रक्षा होती हैं।
- विष के प्रभाव को कम करने में पंचमुखी रुद्राक्ष अति लाभदायक हैं।
- महापुरुषो का कथन हैं की पंचमुखी रुद्राक्ष धारण करने से परस्त्री गमन, अभक्ष्य भोजन का भक्षण करने के पापों से मुक्ति मिलती हैं। चित्त का शुद्धि करण हो जाता हैं।
- पंचमुखी रुद्राक्ष को पंचतत्वों का प्रतीक मानाजाता हैं।
- पंच मुखी रुद्राक्ष को शास्त्रकारों ने आयुवर्द्धक एवं सर्वकल्याणकारी व मंगलप्रदायक माना हैं।
- पंच मुखी रुद्राक्ष अभीष्ट कार्यो की सिद्धि हेतु लाभदाय होता हैं।

जन सामान्य में एसी भ्रमक धारणाएं हैं की पंच मुखी रुद्राक्ष सस्ता एवं आसानी से मिलने के कारण यह अधिक लाभकारी नहीं होता। लेकिन वास्तविकता इससे परे हैं जानकारों का मत हैं की पंचमुखी सर्वाधिक लाभकारक होता हैं। मनुष्य को अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु आवश्यक्ता के अनुशार रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।

**पंच मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-**

*ॐ ह्रां आं क्ष्म्यैं स्वाहा॥*

## छः मुखी रुद्राक्ष:



- छः मुखी रुद्राक्ष साक्षात कार्तिकेय का स्वरुप हैं। कुछ विद्वानो के मत से छः मुखी रुद्राक्ष गणेशजी का प्रतिक हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने से माता पार्वती शीघ्र प्रसन्न होती हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने से विद्या प्राप्ति में सफलता प्राप्त होती हैं। अतः छः मुखी रुद्राक्ष विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहता हैं।

- छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने से वाक शक्ति में निपुणता आती हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने से व्यवसायीक कार्यों में लाभ प्राप्त होता हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष से मनुष्यको भौतिक सुख-संपन्नता प्राप्त होती हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने दारिद्र्यता दूर होती हैं।
- जानकारों नें छः मुखी रुद्राक्ष को धारण करना मूर्च्छा जैसी बीमारी में लाभदायक बताया हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने से अपार शक्ति प्राप्त होती हैं व मनुष्यकी सकल इच्छाओं की पूर्ति होती हैं।
- माहापुरुषो का कथन हैं की छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने से भ्रूणहत्या आदि पापों का निवारण होता हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने से शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करने में सफलता प्राप्त होती हैं।
- इस लिए इसे शत्रुंजय रुद्राक्ष कहां जाता हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने से सभी प्रकार की अभीष्ट सिद्धियां प्राप्ति में सहायता मिलती हैं।

**छः मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-**

*ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सौं ऐं॥*

>> क्रमश: अगले अंक में ...

***

# वर्णमाला के अनुसार स्वप्न फल विचार

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

गतांक से आगे...




- स्वप्न में घडी देखना दूरस्थ स्थान की यात्रा पर जाने का संकेत है।
- स्वप्न में घडी गुम होते देखना यात्रा का कार्यकर्म स्थगित होने का संकेत है।
- स्वप्न में घर खंडहर अवस्था में देखना भूमि-संपत्ति का में लाभ मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में घर सजाया हुआ देखना भूमि-संपत्ति की हानि का संकेत है।
- स्वप्न में घर में किसी और का प्रवेश होते देखना शत्रु पर विजय प्राप्त होने का संकेत है।
- स्वप्न में घर में आग देखना सरकार से लाभ प्राप्त होने का संकेत है।
- स्वप्न में घर सुवर्ण से बना देखना घर में आग लगने का संकेत है।
- स्वप्न में घर लोहे का बना देखना समाज में मान सम्मान बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में घडा भरा देखना धन लाभ प्राप्त होने का संकेत है।
- स्वप्न में घंटे की आवाज़ सुनाई देना किसी वस्तु के चोरी होने का संकेत है।
- स्वप्न में घंटाघर देखना किसे अशुभ समाचार प्राप्त होने का संकेत है।
- स्वप्न में घाट देखना किसी तीर्थ यात्रा पर जाने का संकेत है।
- स्वप्न में घायल को देखना संकट से छुटकारा मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में घास देखना कार्य क्षेत्र में लाभ होने का संकेत है।
- स्वप्न में घी देखना धन-संपत्ति में वृद्धि का संकेत है।
- स्वप्न में घुटने टेकते देखना किसी से वाद विवाद में सफलता मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में घुंघरू की आवाज सुनना सामाजिक मान-सम्मान में वृद्धि होने का संकेत है।
- स्वप्न में घूंघट देखना नया व्यापार या नौकरी में लाभ मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में घोड़ा सजा हुआ देखना किसी महत्वपूर्ण कार्य में हानि होने का संकेत है।
- स्वप्न में घोड़ा काले रंग का देखना समाज में मान-सम्मान बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में घोड़े या हाथी पर चड़ते देखना भाग्योदय होने का संकेत है।




- स्वप्न में चलता पहिया देखना कारोबार में उन्नत्ति होने का संकेत है।
- स्वप्न में चप्पल पहनने देखना दूरस्थ स्थान की यात्रा पर जाने का संकेत है।
- स्वप्न में चक्की देखना मान सम्मान बढ़ने का संकेत है।

- स्वप्न में चमडा देखना दुःख से कष्ट मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में चबूतरा देखना समाज में मान सम्मान बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में चट्टान काले रंग की देखना शुभ संकेत है।
- स्वप्न में चट्टान सफेद रंग की देखना अशुभ संकेत है।
- स्वप्न में चरबी देखना कार्य स्थल या निवास स्थान पर आग लगने का संकेत है।
- स्वप्न में चन्द्र ग्रहण देखना बनते कार्य बिगड ने का संकेत है।
- स्वप्न में चमगादर उड़ते देखना दूरस्थ स्थान की यात्रा पर जाने का संकेत है।
- स्वप्न में चमगादर लटका हुवा देखना अशुभ संकेत है।
- स्वप्न में चम्मच देखना स्वजन से धोखा मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में चप्पल देखना किसी यात्रा पर जाने का संकेत है।
- स्वप्न में चटनी खाते देखना दुखो में वृद्धि होने का संकेत है।
- स्वप्न में चरखा चलाते देखना मशीनरी खराब होने का संकेत है।
- स्वप्न में चश्मा लगते देखना विद्या प्राप्ति एवं मान-सम्मान की प्राप्ति का संकेत हैं।
- स्वप्न में चश्मा खोते देखना चोरी से नुक्शान होने का संकेत है।
- स्वप्न में चांदी के बर्तन में दूध पीते देखना धन-संम्पत्ति में वृद्धि होने का संकेत है।
- स्वप्न में चारपाई देखना धन हानि होने का संकेत है।
- स्वप्न में चादर समेट कर रखते देखना – चोरी होने का संकेत है।
- स्वप्न में चादर मैली देखना धन लाभ मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में चंचल आँखे देखना किसी बीमारी से कष्ट मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में चांदी की वस्तु देखना गृह क्लेश बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में चोकलेट खाते देखना शुभ समय आने वाला है
- स्वप्न में चाय देखना धन वृद्धि होने का संकेत है।
- स्वप्न में चावल देखना कठिनाई से धन मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में चाकू देखना देखना संधर्ष के बाद विजय प्राप्त होने का संकेत है।
- स्वप्न में चित्र देखना किसी पुराने मित्र से भेट होने का संकेत है।
- स्वप्न में चिडिया देखना किसी मेहमान के आने का संकेत है।
- स्वप्न में चींटी देखना धन लाभ मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में चींटी मारना किसी काय में शीघ्र सफलता मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में चींटियों का जमघट देखना परेशानी से कष्ट होने का संकेत है।
- स्वप्न में चील देखना समाज में बदनामी होने का संकेत है।
- स्वप्न में चुम्बन लेते देखना आर्थिक समृधि होने का संकेत है।
- स्वप्न में चुम्बन देत देखना मित्र से प्रेम बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में चुटकी लेते देखना परिवार में कलेश बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में चुडैल देखना धन हानि होने का संकेत है।
- स्वप्न में चूहा देखना औरत से धोखे का संकेत है।
- स्वप्न में चूहा फंसा देखना शारीरिक कष्ट होने का संकेत है।
- स्वप्न में चूहे को चूहे दानी से निकलते देखना किसी कष्ट से शीघ्र मुक्ति मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में चूहा मरा देखना धन लाभ प्राप्त होने का संकेत है।
- स्वप्न में चूहा मारते देखना धन हानि होने का संकेत है।

- स्वप्न में चूडिया तोड़ते किसी स्त्री को दिखे तो उसके पति के दीर्घायु होने का संकेत है।
- स्वप्न में चूडिया सफेद रंग की देखना धन लाभ होने का संकेत है।
- स्वप्न में चूल्हा देखना उत्तम भोजन प्राप्त होने का संकेत है।
- स्वप्न में चूरन खाते देखना बीमारी से राहत मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में चेचक निकले देखना धन प्राप्ति का संकेत है।
- स्वप्न में चोर का पकड़े जाना धन लाभ मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में चोटी पर स्वयं को देखना नुक्शान होने का संकेत है।
- स्वप्न में चोराहा देखना यात्रा में सफलता मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में चौकीदार देखना आकस्मिक धन लाभ मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में चौथ (चतुर्थी) का चाँद देखना अशुभ संकेत है।

>> क्रमशः अगले अंक में ...

***

# अंक ज्योतिष का रहस्य

संकलन गुरुत्व कार्यालय

गतांक से आगे...

## मूलांक 5 स्वामी बुध

| | |
|---|---|
| मूलांक 5 | स्व अंक:- 5 |
| स्वामी ग्रह:- बुध | मित्र अंक:- *1, 6, 8* |
| शत्रु अंक:- 2, 4 | तत्व:- पृथ्वी |
| सम:- 3, 9 | |

यदि किसी व्यक्ति का जन्म किसी भी मास की 5,14 व 23 तारीख को हुवा हैं तो उनका मूलांक 5 होता है।



मूलांक 5 अंक के व्यक्ति अधिक मिलनसा और द्विस्वभाव की विचार धारा वाले होते हैं। व्यक्ति की कार्य क्षेत्र में रुचि नौकरी से अधिक व्यापार में होती हैं।

यदि व्यक्ति नौकरी पसंद करता हैं तो अधिकतर एसी ही नौकरी को चुनते हैं जो लेन-देन, लेखा-जोखा, यांत्रिक और तकनीकी कार्य, वाणिज्य, इत्यादि के कार्य से जुडी हो। व्यक्ति थोडे वाक्पटुता एवं तर्कशील होते हैं, जिससे व्यक्ति सामने वाले को सरलता से अपनी बातों से प्रभावित कर सकत हैं, इस लिए यह लोग इनश्योरेंस, मार्केटिंग आदि के कार्यों में भी सफल हो सकते हैं। मूलांक 5 वाले व्यक्ति अपने कार्यों को जल्दी समाप्त करने हेतु तत्पर होते हैं, इस लिए व्यक्ति प्रायः एसे ही कार्यों का चुनाव करते हैं जिसमें कम मेहनत से अधिक लाभ की प्राप्ति होती हो, जिस कार्य में सफलता जल्दी मिले और निरंतर उन्नत्ति व तरक्की मिलती रहें।

मूलांक 5 का स्वामी ग्रह बुध हैं, इस लिए मूलांक 5 में जन्म लेने वाले व्यक्ति के उपर बुध का विशेष प्रभाव देखने को मिलता हैं, क्योकि 5 मूलांक में जन्म लेने के कारण व्यक्ति के भितर बुध ग्रह की अनुकूलता के कारण बुध ग्रह के गुणों का समावेश अन्य ग्रहों की अपेक्षा अधिक मात्रा में हो जाता हैं। बुध ग्रह के इस विशेष प्रभावि गुणों के कारण ही व्यक्ति नई से नई युक्तियाँ आज़माने, नए से नए विचार एवं सर्वथा नूतन तर्कों से कार्य करने वाले होते हैं। व्यक्ति अपने कार्यक्षेत्र में पूर्णतः क्रियाशील होते हैं। क्योकी यह लोग जिस कार्य को हाथ में लेते हैं उसे पूरा करने के लिए पूर्ण लगन और एकाग्रता से जुट जाते हैं और उस कार्य को तब तक नहीं छोड़ेंगे जब तक कि कार्य पूर्णतः संपन्न न हो जाए। मूलांक 5 वाले व्यक्ति अपने कार्यों में अधिक जल्दबाजी करते हैं व्यक्ति अपने कार्य को जल्द पूर्ण करने के चक्कर में कभी-कभी बडा़ नुकसान कर देते हैं।

मूलांक 5 वाले व्यक्ति झुकते नहीं झुकाने में अधिक विश्वास रखते हैं। मूलांक 5 वाले व्यक्ति की सबसे बडी़ खासियत होते हैं वह दूसरों को प्रभावित करने की कला, क्योकि व्यक्ति कुछ ही क्षणो की बातचीत में दूसरों को अपना बना लेते हैं, उसे अपना स्थाई मित्र भी बनाने में समर्थ होते हैं।

मूलांक 5 वाले व्यक्ति का मस्तिष्क तथा बुद्धि प्रखर होती हैं। इस मूलांक वाले व्यक्ति बडे से बडे और छोटे से छोटी निर्णय को बिना किसी परेशानी के तत्काल ले सकते हैं। तत्काल निर्णय लेना व्यक्ति का सबसे बड़ा गुण होता हैं। किसी व्यक्ति को क्या कहना

नहीं कहना इसका तुरंत और पूर्व निर्णय लेना इनकी विशेषता होती हैं।

मूलांक 5 वाले व्यक्ति की दूसरे व्यक्तियों को पहचानने की शक्ति भी अद्‌वितीय होती हैं इस लिए यह लोग अपरिचित व्यक्ति को भी एक ही नज़र में देखते ही ये भांप जाते हैं।

मूलांक 5 वाले व्यक्ति किसी बात पर अधिक दिन तक सोच विचार नहीं कर सकते, यदि व्यक्ति को विपरित परिस्थितियां अधिक प्रभावित करती हैं, फिर भी व्यक्ति उन बातों को शीघ्र भुल कर आगे बढ़ने में विश्वास रखते हैं। इस लिए व्यक्ति किसी भी प्रकार कठिन से कठिन परिस्थिति से भी शीघ्र मुक्त हो जाते हैं।

मूलांक 5 वाले व्यक्ति में चिड़चिड़ापन या गुस्सा अधिक होता है। इस लिए व्यक्ति का मन अधिक चंचल रहता हैं और कभी-कभी मानसिक अशांति एवं अस्थिरता का अनुभव कर सकते हैं।

मूलांक 5 वाले व्यक्ति का प्रमुख गुण यह होता हैं की वह कठिन और विपरीत परिस्थितयों को भी अपने अनुकूल बनाने की अद्भुत क्षमता रखते है। व्यक्ति यदि एक बार कोई निर्णय कर ले तो उसके सामने कितने ही विघ्न, बाधाएँ आये फिर भी व्यक्ति उस कार्य को संपन्न करके ही छोड़ता हैं। क्योकी व्यक्ति कठिन परिस्थितियों में भी अपनी हिम्मत और धैर्य नहीं खोते हैं, व्यक्ति एसी स्थिति में और भी अधिक एकाग्र और शांत होकर अपने लक्ष्य की और बढ़ते हैं।

व्यक्ति अपने जीवन में एक से अधिक आजीविका से धन प्राप्त करेंगे, यानी व्यक्ति के आय के स्तोत्र एक से अधिक होंगे।

मूलांक 5 वाले व्यक्ति की बोलने की शैली दूसरों से लगत होती है व्यक्ति की बातों में अधिकतर कटाक्ष होते हैं। व्यक्ति तनाव, चिंता के कारण हमेशा मानसिक रुप से अशांत होते हैं। व्यक्ति का क्रोध अधिक होता हैं फिर भी यह लोग क्षणिक क्रोध के बाद उस पर पछतावा भी करते हैं। व्यक्ति थोडे जिद्दी होते हैं, एक बार कोई निर्णय कर ले तो बाद में उस निर्णय पर अड़े रहते हैं। व्यक्ति बुद्धिशाली होने के कारण समाज में अच्छा मान-सम्मान एवं पद प्रतिष्ठा और ख्याति अर्जित कर लेते हैं।

व्यक्ति को प्रेम संबंधित मामलो में थोडा सावधान रहना चाहिए क्योकि व्यक्ति इस मामले में थोडे अधिक भावुक होते हैं जिसके कारण पर स्त्री-पुरुष उन्हें अपने मोह जाल में फसां कर उन्हें बरबाद कर सकते हैं। जीवन में झूठे प्रलोभन एवं कल्पना से केवल दुःख की ही प्राप्ति होती हैं। इस लिए नैतिक अनैतिक के बिच के फर्क को समझ कर अपनी सुझ-बुझ से निर्णय करने चाहिए।

### शुभ दिन:

शुभ वर्ष 23,32,41,50,59,68,77 वां वर्ष हैं, तिथि 5,14,23 शुभ दायक होती हैं, किसी कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिये इन्हीं तिथि का प्रयोग करना चाहिये, इन तिथियों में बुधवार का दिन पड़े तो बहुत शुभ होता हैं।

### स्वास्थ्य:

व्यक्ति प्रायः सर्दी, जुकाम आदि से पीड़ित रहना पड़ता हैं। नर्वस ब्रेकडाउन का भी भय बना रहता हैं। कण्ठ रोग, जीभ संबंधि रोग, कंधे में दर्द, हड्डियों संबंधि रोग, कान तथा ष्वास प्रक्रिया संबंधित बीमारियां हुआ करती हैं। हृदय रोग, मोतीझर, मूत्र रोग, वीर्य दोष, मिर्गी, नासिका रोग, तीव्र ज्वर, पागलपन, खाज-खुजली, लकवा, पांवों की सूजन, मूर्च्छा आना, नासूर, हैजा, मंदाग्नि, गले के रोग तथा त्वचा संबंधित बीमारियां हुआ करती हैं।

### उपयुक्त आहार:

सेब, केला, चीकू, अनार, अनानस, अंगूर, पुदिना, गाजर, पालक, भिण्डी, बैंगन, करेले, तुलसी, बादाम, अंजीर, केसर, अखरोट लाभदायक रहते हैं।

### अनुकूल व्यवसाय:

व्यक्ति टेलीफोन विभाग, ज्योतिष, सेल्समैन, बीमा, बैंक, रेल्वे इंजीनियरींग, संपादन, तम्बाकू, मुनिम, पत्रकारिता, अनुवाद, राजनीति, पुस्तक विक्रेता, पुरातत्व

विज्ञान, आविस्कार, प्रिंटींग, लेखन, खोज, डाक, पर्यटन विभाग आदि संबंधित कार्यो में अधिक सफल होते हैं।

### शुभ दिशा:

व्यक्ति के लिए पूर्वोतर एवं पश्चिमोत्तर दिशा शुभदायी रहती हैं। व्यक्ति के लिए हरा, श्वेत, भूरा, कत्थई चमकदार एवं मटमैला रंग अनुकूल एवं लाभप्रद होता है।

### मूलांक 5 के व्यक्ति के लिए कष्ट निवारक उपाय

- आपके **मूलांक के** स्वामी ग्रह बुध के शुभ प्रभावो की वृद्धि हेतु आप अपनी कनिष्ठिका उंगली में पन्न धारण कर सकते हैं। पन्नाके बदले उसका उपरत्न ओनेक्ष या मरगच धारण कर सकते हैं।
- अपने पूजा स्थान में प्राण-प्रतिष्ठित पन्ना गणेश(मरगच गणेश), बुध यंत्र को स्थापित कर सकते हैं।
- यदि आर्थिक समस्या हो तो प्राण-प्रतिष्ठित श्रीयंत्र का नियमित पूजन करना लाभप्रद रहेगा।

### ग्रह शांति के लिए व्रत उपवास:

**बुधवार का व्रत:** बुध ग्रह को प्रसन्न करने हेतु बुधवार का व्रत किया जाता हैं। बुधवार का व्रत व्यवसाय करने वालो हेतु लाभदायी होता हैं। बुधवार का व्रत गणेश जी एवं मां दुर्गा कि कृपा प्राप्ति हेतु किया जाता हैं। इस व्रत के करने से बुद्धिका विकास होता हैं, इस दिन व्रत के साथ दुर्गा सप्तशतीका पाठ करने से मनोवांछित फल कि प्राप्ति होती हैं। बुधवार का व्रत करने से बुध के प्रभाव में आने वाले सभी व्यवसाय एवं वस्तुओ से लाभ प्राप्त होता हैं।

### ग्रह शांति के लिए उपयुक्त रुद्राक्ष:

आपके **मूलांक का** स्वामी बुध हैं अतः बुध ग्रह के अशुभ प्रभाव को दूर करने और शुभफलों की प्राप्ति के लिए 4 मुखी रुद्राक्ष धारण करना आपके लिए उपयुक्त रहेगा। आप 4 मुखी रुद्राक्ष के साथ में 6 मुखी या 13 मुखी और 7 मुखी या 14 मुखी रुद्राक्ष भी धारण करने से आपको विशेष शुभ परिणामो की प्राप्ति होगी।

### शांति के लिए दान

**ग्रह:- बुध, वार:- बुधवार**

बुध ग्रह कि शांति हेतु हरे पन्ना, मूँग, घी, हरा कपड़ा, चाँदी, फूल, काँसे का बर्तन, कपूर का दान करने से शुभ फल कि प्राप्ति होती हैं

### ग्रह शांति के अन्य सरल उपाय:

- कार्य सिद्धि हेतु हरे रंग का रुमाल हमेशा अपने पास रखें।
- बीमारी में पैसा खर्च हो रहा हो तो जरुर मंद व्यक्ति को मीठा व नमकीन दोनों प्रकार का भोजन कारएं।
- घर में कलह होती हो तो नवरात्र में दुर्गा सप्तशती का पाठ करें और शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को एक कुमारी कन्या को भोजन कराएं।
- दफ्तर की परेशानियों से बचने के लिए 1 साबूत हल्दी की गांठ लेकर उसे बहते पानी में बहा दें और 1 साबूत हल्दी की गांठ को अपने दफ्तर में सुरक्षित रख लें।
- भूमि-भवन से संबंधित विवाद को सुलझाने के लिए रात में बुजुर्गों को दूध पीलाएं।
- नौकरी-व्यवसाय के कार्यो में विध्न-बाधाएं आरही हो तो गरीब व्यक्ति को काला कंबल दान दें।
- अपने मान-सम्मान एवं प्रतिष्ठा बढाने हेतु पानी में थोडी फिटकरी डाल कर स्नान करें।

>> क्रमशः अगले अंक में ...

# देवउठनी एकादशी की पौराणिक व्रत कथा

संकलन गुरुत्व कार्यालय

देवउठनी एकादशी कि व्रत कथा कि पौराणिक कथा के अनुसार किसी एक राजा के राज्य में सभी लोग एकादशी का व्रत रखते थे। एकादशी के दिन राज्य कि प्रजा तथा नौकर-चाकरों से लेकर पशुओं तक भोजन में अन्न नहीं दिया जाता था।

एक दिन दूसरे राज्य का एक व्यक्ति राजा के पास आकर बोला- महाराज! कृपा करके मुझे आपके यहां काम पर रख लें। तब राजा ने उस व्यक्ति के सामने एक शर्त रखी कि तुम्हें रोज खाने को सब कुछ मिलेगा, पर एकादशी को भोजन में अन्न नहीं मिलेगा।



उस व्यक्ति ने नौकरी कि लालच में उस समय राजा को हाँ कर दी, पर एकादशी के दिन जब उसे फलाहार का सामान दिया गया तो वह राजा के सामने जाकर गिड़-गिड़ाने लगा महाराज! फलाहार से मेरा पेट नहीं भरेगा। मैं भूखा ही मर जाऊँगा। कृप्या मुझे भोजन में अन्न दे दो। राजा ने उसे शर्त याद दिलाई, पर वह अन्न छोड़ने को राजी नहीं हुआ, तब राजा ने उसे भोजन में अन्न कि सामग्री आदि दिए।

वह अपनी दिनचर्या के अनुसार नदी किनारे पहुँचा और स्नान कर भोजन पकाने लगा। जब भोजन बन गया तो वह भगवान को बुलाने लगा आओ भगवान! भोजन तैयार हैं। बुलाने पर पीताम्बर धारण किए भगवान चतुर्भुज रूप में आ पहुँचे तथा प्रेम से उसके साथ भोजन करने लगे। भोजनादि करके भगवान अंतर्धान हो गए तथा वह अपने काम पर चला गया।

पंद्रह दिन बाद अगली एकादशी को वह राजा से कहने लगा कि महाराज, मुझे दुगुना सामान दीजिए। उस दिन तो मैं भूखा ही रह गया। राजा ने कारण पूछा तो उसने बताया कि हमारे साथ भगवान भी खाते हैं। इसीलिए हम दोनों के लिए ये सामान पूरा नहीं होता। यह सुनकर राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। राजा बोले मैं नहीं मान सकता कि तुम्हारे साथ भगवान भी खाते हैं। मैं तो इतना व्रत रखता हूँ, पूजा करता हूँ, पर भगवान ने मुझे कभी दर्शन नहीं दिए।

राजा कि बात सुनकर वह बोला- महाराज! यदि विश्वास न हो तो साथ चलकर देख लें। राजा एक पेड़ के पीछे छिपकर बैठ गया। उस व्यक्ति ने भोजन बनाया तथा भगवान को शाम तक पुकारता रहा, परंतु भगवान न आए। अंत में उसने कहा- हे भगवान! यदि आप नहीं आए तो मैं नदी में कूदकर प्राण त्याग दूँगा।

लेकिन भगवान नहीं आए, तब वह प्राण त्यागने के उद्देश्य से नदी कि तरफ बढ़ा। प्राण त्यागने का उसका दृढ़ इरादा जान शीघ्र ही भगवान ने प्रकट होकर उसे रोक लिया और साथ बैठकर भोजन करने लगे। खा-पीकर वे उसे अपने विमान में बिठाकर अपने धाम ले गए। यह देख राजा ने सोचा कि व्रत-उपवास से तब तक कोई फायदा नहीं होता, जब तक मन शुद्ध न हो। इससे राजा को ज्ञान मिला। वह भी मन से व्रत-उपवास करने लगा और अंत में स्वर्ग को प्राप्त हुआ।

## दूसरी कथा

एक राजा था। उसके राज्य में प्रजा सुखी थी। एकादशी को कोई भी अन्न नहीं बेचता था। सभी फलाहार करते थे। एक बार भगवान ने राजा कि परीक्षा लेनी चाही। भगवान ने एक सुंदरी का रूप धारण किया तथा सड़क पर बैठ गए। तभी राजा उधर से निकला और सुंदरी को देख चकित रह गया। उसने पूछा- हे सुंदरी! तुम कौन हो और इस तरह यहाँ क्यों बैठी हो?

तब सुंदर स्त्री बने भगवान बोले- मैं निराश्रिता हूँ। नगर में मेरा कोई जाना-पहचाना नहीं हैं, किससे सहायता माँगू? राजा उसके रूप पर मोहित हो गया था। वह बोला- तुम मेरे महल में चलकर मेरी रानी बनकर रहो।

सुंदरी बोली- मैं तुम्हारी बात मानूँगी, पर तुम्हें राज्य का अधिकार मुझे सौंपना होगा। राज्य पर मेरा पूर्ण अधिकार होगा। मैं जो भी बनाऊँगी, तुम्हें खाना होगा। राजा उसके रूप पर मोहित था, अतः उसने उसकी सभी शर्तें स्वीकार कर लीं। अगले दिन एकादशी थी। रानी ने हुक्म दिया कि बाजारों में अन्य दिनों कि तरह अन्न बेचा जाए। उसने घर में मांस-मछली आदि पकवाए तथा परोसकर राजा से खाने के लिए कहा। यह देखकर राजा बोला-रानी! आज एकादशी हैं। मैं तो केवल फलाहार ही करूँगा। तब रानी ने शर्त कि याद दिलाई और बोली- या तो खाना खाओ, नहीं तो मैं बड़े राजकुमार का सिर काट लूँगी। राजा ने अपनी स्थिति बड़ी रानी से कही तो बड़ी रानी बोली- महाराज! धर्म न छोड़ें, बड़े राजकुमार का सिर दे दें। पुत्र तो फिर मिल जाएगा, पर धर्म नहीं मिलेगा।

इसी दौरान बड़ा राजकुमार खेलकर आ गया। माँ कि आँखों में आँसू देखकर वह रोने का कारण पूछने लगा तो माँ ने उसे सारी वस्तुस्थिति बता दी। तब वह बोला- मैं सिर देने के लिए तैयार हूँ। पिताजी के धर्म कि रक्षा होगी, जरूर होगी।

राजा दुःखी मन से राजकुमार का सिर देने को तैयार हुआ तो रानी के रूप से भगवान विष्णु ने प्रकट होकर असली बात बताई- राजन! तुम इस कठिन परीक्षा में पास हुए। भगवान ने प्रसन्न मन से राजा से वर माँगने को कहा तो राजा बोला- आपका दिया सब कुछ हैं। हमारा उद्धार करें। उसी समय वहाँ एक विमान उतरा। राजा ने अपना राज्य पुत्र को सौंप दिया और विमान में बैठकर वैकुंठ धाम को चला गया।

# बैकुण्ठ चतुर्दशी 21 नवम्बर 2018

संकलन गुरुत्व कार्यालय

कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को बैकुण्ठ चतुर्दशी व्रत या बैकुण्ठ चौदस व्रत के नाम से जाना जाता हैं। मान्यता हैं, कि इस दिन स्वर्ग के द्वार हरी भक्तों के लिए खुले होते हैं। बैकुण्ठ चतुर्दशी व्रत में भगवान शिवजी और विष्णुजी का पूजन किया जाता हैं। बैकुण्ठ चतुर्दशी के दिन भगवान विष्णु का पूर्ण विधि-विधान से पूजन-अर्चन करना चाहिए। इस दिन भगवत गीता एवं श्रीसुक्त का पाठ करना विशेष लाभप्रद होता है। विद्वानों का मत हैं की बैकुण्ठ चतुर्दशी के दिन श्रीविष्णु का पूज एवं श्रीविष्णु की कथा का श्रवण करने से मनुष्य के समस्त पापों का नाश होता है। विष्णु मंत्र का जाप एवं स्तोत्र का विधि-विधान से पाठ करने से मनुष्य को बैकुण्ठ की प्राप्ति होती है।

बैकुण्ठ चतुर्दशी पौराणिक कथा के अनुसार एक बार नारद जी ने भगवान श्री विष्णु से प्रश्न किया भक्ति व मुक्ति का सरल उपाय क्या हैं। नारद जी के का प्रश्न सुनकर भगवान श्री विष्णु जी ने कहां, हे देवर्षि, कार्तिक शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को जो मनुष्य व्रत रखते हैं, और पूर्ण श्रद्धा व भक्ति से मेरा पूजन-अर्चन करते हैं। उन्हें मेरी प्रसन्नता से बैकुण्ठ की प्राप्ति होती हैं।बैकुण्ठ चतुर्दशी व्रत का विशेष लाभ प्राप्ति हेतु प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर व्रत का संकल्प करना चाहिए। शास्त्रों मान्यता के अनुसार इस दिन यदि कोइ मनुषय एक सहस्त्र (एक हजार) कमल पुष्पों से भगवान श्री विष्णु और शिवजी का पूजन-अर्चन करते हैं, उन्हें संसार के समस्त बंधनों से मुक्ति मिलती हैं, और उन्हें अंत समय में बैकुण्ठ की प्राप्ति होती हैं।

कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी अर्थात बैकुण्ठ चतुर्दशी भगवान विष्णु तथा शिवजी के संयुक्त पूजन का प्रतीक है। शास्त्रोक्त मतानुसार एक बार भगवान विष्णुजी काशी में भगवान शिवजी को एक सहस्त्र (हजार) स्वर्ण कमल के पुष्प चढ़ाने का संकल्प करते हैं। लेकिन जब अनुष्ठान का समय आता हैं, तब शिवजी, विष्णुजी की परीक्षा लेने के उद्देश्य से एक स्वर्ण पुष्प कम कर देते हैं। पुष्प कम होने की बात विष्णुजी को ज्ञात होती ही वह अपने दोनों कमल नयनों को स्मरण करके अपना एक नेत्र शिवजी को अर्पित करने के लिए तैयार होते हैं। विष्णुजी की श्रद्धा-भक्ति देखकर भगवान शिव प्रकट होते हैं, आज से कार्तिक मास की इस शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी बैकुण्ठ चतुर्दशी के नाम से प्रसिद्ध होगी। मान्यता हैं की इसी दिन शिवजी ने विष्णुजी को करोड़ो सूर्य की कांति के समान सुदर्शन चक्र भेट किया था।

# सर्व कार्य सिद्धि कवच



जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

**कवच के प्रमुख लाभ**: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।



## GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

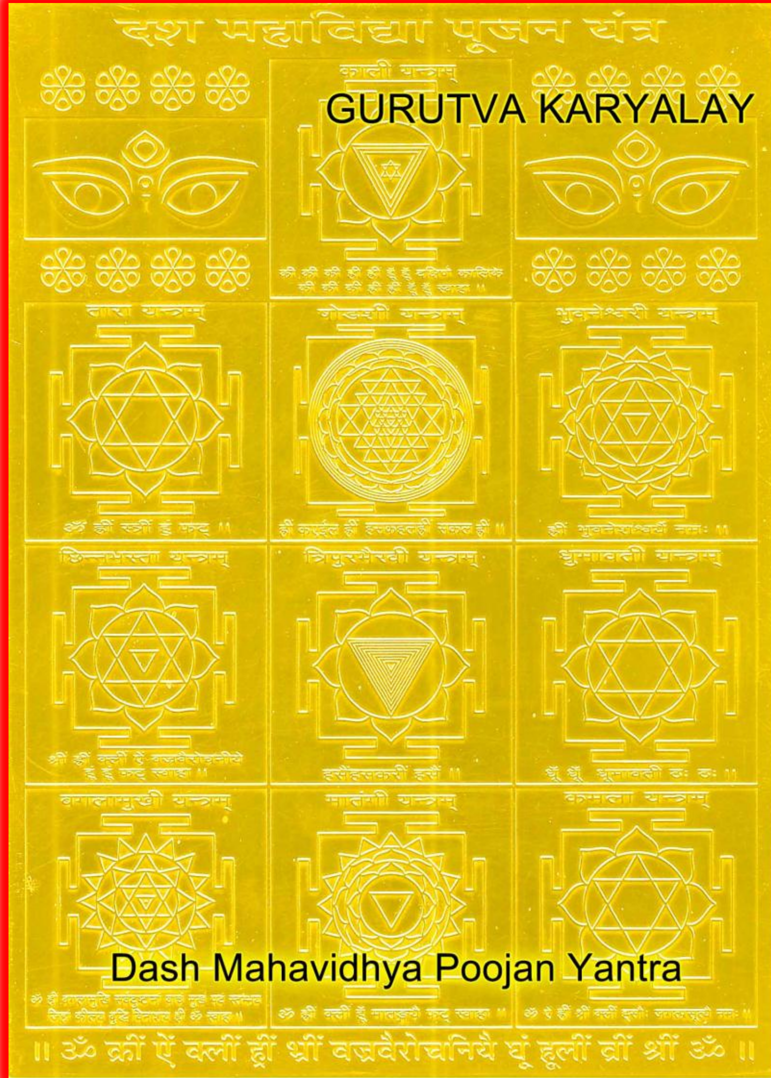
# श्री गणेश यंत्र

गणेश यंत्र सर्व प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि प्रदाता एवं सभी प्रकार की उपलब्धियों देने में समर्थ है, क्योकी श्री गणेश यंत्र के पूजन का फल भी भगवान गणपति के पूजन के समान माना जाता हैं। हर मनुष्य को को जीवन में सुख-समृद्धि की प्राप्ति एवं नियमित जीवन में प्राप्त होने वाले विभिन्न कष्ट, बाधा-विघ्नों को नास के लिए श्री गणेश यंत्र को अपने पूजा स्थान में अवश्य स्थापित करना चाहिए। श्रीगणपत्यथर्वशीर्ष में वर्णित हैं ॐकार का ही व्यक्त स्वरूप श्री गणेश हैं। इसी लिए सभी प्रकार के शुभ मांगलिक कार्यों और देवता-प्रतिष्ठापनाओं में भगवान गणपति का प्रथम पूजन किया जाता हैं। जिस प्रकार से प्रत्येक मंत्र कि शक्ति को बढाने के लिये मंत्र के आगें ॐ (ओम्) आवश्य लगा होता हैं। उसी प्रकार प्रत्येक शुभ मांगलिक कार्यों के लिये भगवान् गणपति की पूजा एवं स्मरण अनिवार्य माना गया हैं। इस पौराणिक मत को सभी शास्त्र एवं वैदिक धर्म, सम्प्रदायों ने गणेश जी के पूजन हेतु इस प्राचीन परम्परा को एक मत से स्वीकार किया हैं।

- श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति को बुद्धि, विद्या, विवेक का विकास होता हैं और रोग, व्याधि एवं समस्त विध्न-बाधाओं का स्वतः नाश होता है। श्री गणेशजी की कृपा प्राप्त होने से व्यक्ति के मुश्किल से मुश्किल कार्य भी आसान हो जाते हैं।
- जिन लोगो को व्यवसाय-नौकरी में विपरीत परिणाम प्राप्त हो रहे हों, पारिवारिक तनाव, आर्थिक तंगी, रोगों से पीड़ा हो रही हो एवं व्यक्ति को अथक मेहनत करने के उपरांत भी नाकामयाबी, दु:ख, निराशा प्राप्त हो रही हो, तो एसे व्यक्तियो की समस्या के निवारण हेतु चतुर्थी के दिन या बुधवार के दिन श्री गणेशजी की विशेष पूजा-अर्चना करने का विधान शास्त्रों में बताया हैं।
- जिसके फल से व्यक्ति की किस्मत बदल जाती हैं और उसे जीवन में सुख, समृद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती हैं। जिस प्रकार श्री गणेश जी का पूजन अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु किया जाता हैं, उसी प्रकार श्री गणेश यंत्र का पूजन भी अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु अलग-अलग किया जाता सकता हैं।
- श्री गणेश यंत्र के नियमित पूजन से मनुष्य को जीवन में सभी प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि व धन-सम्पत्ति की प्राप्ति हेतु श्री गणेश यंत्र अत्यंत लाभदायक हैं। श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति की सामाजिक पद-प्रतिष्ठा और कीर्ति चारों और फैलने लगती हैं।
- विद्वानों का अनुभव हैं की किसी भी शुभ कार्य को प्रारंप करने से पूर्व या शुभकार्य हेतु घर से बाहर जाने से पूर्व गणपति यंत्र का पूजन एवं दर्शन करना शुभ फलदायक रहता हैं। जीवन से समस्त विघ्न दूर होकर धन, आध्यात्मिक चेतना के विकास एवं आत्मबल की प्राप्ति के लिए मनुष्य को गणेश यंत्र का पूजन करना चाहिए।
- गणपति यंत्र को किसी भी माह की गणेश चतुर्थी या बुधवार को प्रात: काल अपने घर, ओफिस, व्यवसायीक स्थल पर पूजा स्थल पर स्थापित करना शुभ रहता हैं।

**गुरुत्व कार्यालय में उपलब्ध अन्य :** लक्ष्मी गणेश यंत्र | गणेश यंत्र | गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित) | गणेश सिद्ध यंत्र | एकाक्षर गणपति यंत्र | हरिद्रा गणेश यंत्र भी उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी आप हमारी वेब साइट पर प्राप्त कर सकते हैं।

# दस महाविद्या पूजन यंत्र




दस महाविद्या पूजन यंत्र को देवी दस महाविद्या की शक्तियों से युक्त अत्यंत प्रभावशाली और दुर्लभ यंत्र माना गया हैं।

इस यंत्र के माध्यम से साधक के परिवार पर दसो महाविद्याओं का आशिर्वाद प्राप्त होता हैं। दस महाविद्या यंत्र के नियमित पूजन-दर्शन से मनुष्य की सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती हैं। दस महाविद्या यंत्र साधक की समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ हैं। दस महाविद्या यंत्र मनुष्य को शक्तिसंपन्न एवं भूमिवान बनाने में समर्थ हैं।

दस महाविद्या यंत्र के श्रद्धापूर्वक पूजन से शीघ्र देवी कृपा प्राप्त होती हैं और साधक को दस महाविद्या देवीयों की कृपा से संसार की समस्त सिद्धियों की प्राप्ति संभव हैं। देवी दस महाविद्या की कृपा से साधक को धर्म, अर्थ, काम व् मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थों की प्राप्ति हो सकती हैं। दस महाविद्या यंत्र में माँ दुर्गा के दस अवतारों का आशीर्वाद समाहित हैं, इस लिए दस महाविद्या यंत्र को के पूजन एवं दर्शन मात्र से व्यक्ति अपने जीवन को निरंतर अधिक से अधिक सार्थक एवं सफल बनाने में समर्थ हो सकता हैं।

देवी के आशिर्वाद से व्यक्ति को ज्ञान, सुख, धन-संपदा, ऐश्वर्य, रूप-सौंदर्य की प्राप्ति संभव हैं। व्यक्ति को वाद-विवाद में शत्रुओं पर विजय की प्राप्ति होती हैं।

दश महाविद्या को शास्त्रों में आद्या भगवती के दस भेद कहे गये हैं, जो क्रमशः (1) काली, (2) तारा, (3) षोडशी, (4) भुवनेश्वरी, (5) भैरवी, (6) छिन्नमस्ता, (7) धूमावती, (8) बगला, (9) मातंगी एवं (10) कमात्मिका। इस सभी देवी स्वरुपों को, सम्मिलित रुप में दश महाविद्या के नाम से जाना जाता हैं।

# मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमा

| | | | |
|---|---|---|---|
| पारद श्री यंत्र | पारद लक्ष्मी गणेश | पारद लक्ष्मी नारायण | पारद लक्ष्मी नारायण |
| 21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध | 100 Gram | 121 Gram | 100 Gram |
| पारद शिवलिंग | पारद शिवलिंग+नंदि | पारद शिवजी | पारद काली |
| 21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध | 101 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध | 75 Gram | 37 Gram |
| पारद दुर्गा | पारद दुर्गा | पारद सरस्वती | पारद सरस्वती |
| 82 Gram | 100 Gram | 50 Gram | 225 Gram |
| पारद हनुमान 2 | पारद हनुमान 3 | पारद हनुमान 1 | पारद कुबेर |
| 100 Gram | 125 Gram | 100 Gram | 100 Gram |

हमारें यहां सभी प्रकार की मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमाएं, शिवलिंग, पिरामिड, माला एवं गुटिका शुद्ध पारद में उपलब्ध हैं।

बिना मंत्र सिद्ध की हुई पारद प्रतिमाएं थोक व्यापारी मूल्य पर उपलब्ध हैं।

ज्योतिष, रत्न व्यवसाय, पूजा-पाठ इत्यादि क्षेत्र से जुडे बंधु/बहन के लिये हमारें विशेष यंत्र, कवच, रत्न, रुद्राक्ष व अन्य दुलभ सामग्रीयों पर विशेष सुबिधाएं उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

**GURUTVA KARYALAY**

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com

# हमारे विशेष यंत्र

**व्यापार वृद्धि यंत्र:** हमारे अनुभवों के अनुसार यह यंत्र व्यापार वृद्धि एवं परिवार में सुख समृद्धि हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

**भूमिलाभ यंत्र:** भूमि, भवन, खेती से संबंधित व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए भूमिलाभ यंत्र विशेष लाभकारी सिद्ध हुवा हैं।

**तंत्र रक्षा यंत्र:** किसी शत्रु द्वारा किये गये मंत्र-तंत्र आदि के प्रभाव को दूर करने एवं भूत, प्रेत नज़र आदि बुरी शक्तियों से रक्षा हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

**आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र:** अपने नाम के अनुसार ही मनुष्य को आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु फलप्रद हैं इस यंत्र के पूजन से साधक को अप्रत्याशित धन लाभ प्राप्त होता हैं। चाहे वह धन लाभ व्यवसाय से हो, नौकरी से हो, धन-संपत्ति इत्यादि किसी भी माध्यम से यह लाभ प्राप्त हो सकता हैं। हमारे वर्षों के अनुसंधान एवं अनुभवों से हमने आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से शेयर ट्रेडिंग, सोने-चांदी के व्यापार इत्यादि संबंधित क्षेत्र से जुडे लोगो को विशेष रुप से आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होते देखा हैं। आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से विभिन्न स्रोत से धनलाभ भी मिल सकता हैं।

**पदौन्नति यंत्र:** पदौन्नति यंत्र नौकरी पैसा लोगो के लिए लाभप्रद हैं। जिन लोगों को अत्याधिक परिश्रम एवं श्रेष्ठ कार्य करने पर भी नौकरी में उन्नति अर्थात प्रमोशन नहीं मिल रहा हो उनके लिए यह विशेष लाभप्रद हो सकता हैं।

**रत्नेश्वरी यंत्र:** रत्नेश्वरी यंत्र हीरे-जवाहरात, रत्न पत्थर, सोना-चांदी, ज्वैलरी से संबंधित व्यवसाय से जुडे लोगों के लिए अधिक प्रभावी हैं। शेर बाजार में सोने-चांदी जैसी बहुमूल्य धातुओं में निवेश करने वाले लोगों के लिए भी विशेष लाभदाय हैं।

**भूमि प्राप्ति यंत्र:** जो लोग खेती, व्यवसाय या निवास स्थान हेतु उत्तम भूमि आदि प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन उस कार्य में कोई ना कोई अड़चन या बाधा-विघ्न आते रहते हो जिस कारण कार्य पूर्ण नहीं हो रहा हो, तो उनके लिए भूमि प्राप्ति यंत्र उत्तम फलप्रद हो सकता हैं।

**गृह प्राप्ति यंत्र:** जो लोग स्वयं का घर, दुकान, ओफिस, फैक्टरी आदि के लिए भवन प्राप्त करना चाहते हैं। यथार्थ प्रयासो के उपरांत भी उनकी अभिलाषा पूर्ण नहीं हो पारही हो उनके लिए गृह प्राप्ति यंत्र विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकता हैं।

**कैलास धन रक्षा यंत्र:** कैलास धन रक्षा यंत्र धन वृद्धि एवं सुख समृद्धि हेतु विशेष फलदाय हैं।

# सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका

इस मुद्रिका में मूंगे को शुभ मुहूर्त में त्रिधातु (सुवर्ण+रजत+तांबें) में जड़वा कर उसे शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सर्वसिद्धिदायक बनाने हेतु प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त किया जाता हैं। इस मुद्रिका को किसी भी वर्ग के व्यक्ति हाथ की किसी भी उंगली में धारण कर सकते हैं। यहं मुद्रिका कभी किसी भी स्थिती में अपवित्र नहीं होती। इस लिए कभी मुद्रिका को उतारने की आवश्यक्ता नहीं हैं। इसे धारण करने से व्यक्ति की समस्याओं का समाधान होने लगता हैं। धारणकर्ता को जीवन में सफलता प्राप्ति एवं उन्नति के नये मार्ग प्रसस्त होते रहते हैं और जीवन में सभी प्रकार की सिद्धियां भी शीध्र प्राप्त होती हैं। **मूल्य मात्र- 6400/-**

>> **Shop Online** | **Order Now**

(**नोट:** इस मुद्रिका को धारण करने से मंगल ग्रह का कोई बुरा प्रभाव साधक पर नहीं होता हैं।)

**सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका के विषय में अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।**

## पति-पत्नी में कलह निवारण हेतु

यदि परिवारों में सुख-सुविधा के समस्त साधान होते हुए भी छोटी-छोटी बातो में पति-पत्नी के बिच मे कलह होता रहता हैं, तो घर के जितने सदस्य हो उन सबके नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में बिना किसी पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप मंत्र सिद्ध पति वशीकरण या पत्नी वशीकरण एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क आप कर सकते हैं।

# 100 से अधिक जैन यंत्र

हमारे यहां जैन धर्म के सभी प्रमुख, दुर्लभ एवं शीघ्र प्रभावशाली यंत्र ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के यंत्र कोपर ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। इसके अलावा आपकी आवश्यकता अनुसार आपके द्वारा प्राप्त (चित्र, यंत्र, ड़िज़ाईन) के अनुरुप यंत्र भी बनवाए जाते है. गुरुत्व कार्यालय द्वारा उपलब्ध कराये गये सभी यंत्र अखंडित एवं 22 गेज शुद्ध कोपर(ताम्र पत्र)- 99.99 टच शुद्ध सिलवर (चांदी) एवं 22 केरेट गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। यंत्र के विषय मे अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

## द्वादश महा यंत्र

यंत्र को अति प्राचिन एवं दुर्लभ यंत्रो के संकलन से हमारे वर्षो के अनुसंधान द्वारा बनाया गया हैं।

- ❖ परम दुर्लभ वशीकरण यंत्र,
- ❖ भाग्योदय यंत्र
- ❖ मनोवांछित कार्य सिद्धि यंत्र
- ❖ राज्य बाधा निवृत्ति यंत्र
- ❖ गृहस्थ सुख यंत्र
- ❖ शीघ्र विवाह संपन्न गौरी अनंग यंत्र
- ❖ सहस्त्राक्षी लक्ष्मी आबद्ध यंत्र
- ❖ आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र
- ❖ पूर्ण पौरुष प्राप्ति कामदेव यंत्र
- ❖ रोग निवृत्ति यंत्र
- ❖ साधना सिद्धि यंत्र
- ❖ शत्रु दमन यंत्र

उपरोक्त सभी यंत्रो को द्वादश महा यंत्र के रुप में शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध पूर्ण प्राणप्रतिष्ठित एवं चैतन्य युक्त किये जाते हैं। जिसे स्थापीत कर बिना किसी पूजा अर्चना-विधि विधान विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं।



- ❖ क्या आपके बच्चे कुसंगती के शिकार हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे आपका कहना नहीं मान रहे हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे घर में अशांति पैदा कर रहे हैं?

घर परिवार में शांति एवं बच्चे को कुसंगती से छुडाने हेतु बच्चे के नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में स्थापित कर अल्प पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप तो आप मंत्र सिद्ध वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क इस कर सकते हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com |
www.gurutvakaryalay.blogspot.com

# नवरत्न जड़ित श्री यंत्र



शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों और यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता हैं। सभी रत्नो को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत एश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति को एसा आभास होता हैं जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारणकरने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता हैं।

गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता हैं एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता हैं। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता हैं। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरूत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं। Rs: 4600, 5500, 6400 से 10,900 से अधिक

>> Shop Online | Order Now

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

92/3BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com

# मंत्र सिद्ध वाहन दुर्घटना नाशक मारुति यंत्र

पौराणिक ग्रंथो में उल्लेख हैं की महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन के रथ के अग्रभाग पर मारुति ध्वज एवं मारुति यन्त्र लगा हुआ था। इसी यंत्र के प्रभाव के कारण संपूर्ण युद्ध के दौरान हज़ारों-लाखों प्रकार के आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार होने के बाद भी अर्जुन का रथ जरा भी क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। भगवान श्री कृष्ण मारुति यंत्र के इस अद्भुत रहस्य को जानते थे कि जिस रथ या वाहन की रक्षा स्वयं श्री मारुति नंदन करते हों, वह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हो सकता हैं। वह रथ या वाहन तो वायुवेग से, निर्बाधित रुप से अपने लक्ष्य पर विजय पतका लहराता हुआ पहुंचेगा। इसी लिये श्री कृष्ण नें अर्जुन के रथ पर श्री मारुति यंत्र को अंकित करवाया था।

जिन लोगों के स्कूटर, कार, बस, ट्रक इत्यादि वाहन बार-बार दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हो!, अनावश्यक वाहन को नुक्षान हो रहा हों! उन्हें हानी एवं दुर्घटना से रक्षा के उद्देश्य से अपने वाहन पर मंत्र सिद्ध श्री मारुति यंत्र अवश्य लगाना चाहिए। जो लोग ट्रान्स्पोर्टिंग (परिवहन) के व्यवसाय से जुडे हैं उनको श्रीमारुति यंत्र को अपने वाहन में अवश्य स्थापित करना चाहिए, क्योकि, इसी व्यवसाय से जुडे सैकडों लोगों का अनुभव रहा हैं की श्री मारुति यंत्र को स्थापित करने से उनके वाहन अधिक दिन तक अनावश्यक खर्चो से एवं दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहे हैं। हमारा स्वयंका एवं अन्य विद्वानो का अनुभव रहा हैं, की जिन लोगों ने श्री मारुति यंत्र अपने वाहन पर लगाया हैं, उन लोगों के वाहन बडी से बडी दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहते हैं। उनके वाहनो को कोई विशेष नुक्शान इत्यादि नहीं होता हैं और नाहीं अनावश्यक रुप से उसमें खराबी आति हैं।

**वास्तु प्रयोग में मारुति यंत्र:** यह मारुति नंदन श्री हनुमान जी का यंत्र है। यदि कोई जमीन बिक नहीं रही हो, या उस पर कोई वाद-विवाद हो, तो इच्छा के अनुरूप वहँ जमीन उचित मूल्य पर बिक जाये इस लिये इस मारुति यंत्र का प्रयोग किया जा सकता हैं। इस मारुति यंत्र के प्रयोग से जमीन शीघ्र बिक जाएगी या विवादमुक्त हो जाएगी। इस लिये यह यंत्र दोहरी शक्ति से युक्त है।

मारुति यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

**मूल्य Rs- 325 से 12700 तक**

**श्री हनुमान यंत्र** शास्त्रों में उल्लेख हैं की श्री हनुमान जी को भगवान सूर्यदेव ने ब्रह्मा जी के आदेश पर हनुमान जी को अपने तेज का सौवाँ भाग प्रदान करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया था, कि मैं हनुमान को सभी शास्त्र का पूर्ण ज्ञान दूँगा। जिससे यह तीनोलोक में सर्व श्रेष्ठ वक्ता होंगे तथा शास्त्र विद्या में इन्हें महारत हासिल होगी और इनके समन बलशाली और कोई नहीं होगा। जानकारो ने मतानुसार हनुमान यंत्र की आराधना से पुरुषों की विभिन्न बीमारियों दूर होती हैं, इस यंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने के कारण व्यक्ति की स्वप्न दोष, धातु रोग, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, नपुंसकता इत्यादि अनेक प्रकार के दोषो को दूर करने में अत्यन्त लाभकारी हैं। अर्थात यह यंत्र पौरुष को पुष्ट करता हैं। श्री हनुमान यंत्र व्यक्ति को संकट, वाद-विवाद, भूत-प्रेत, द्यूत क्रिया, विषभय, चोर भय, राज्य भय, मारण, सम्मोहन स्तंभन इत्यादि से संकटो से रक्षा करता हैं और सिद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं।

श्री हनुमान यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

**मूल्य Rs- 910 से 12700 तक**

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,

BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in, >> Shop Online | Order Now

| विभिन्न देवताओं के यंत्र | | |
|---|---|---|
| गणेश यंत्र | महामृत्युंजय यंत्र | राम रक्षा यंत्र राज |
| गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित) | महामृत्युंजय कवच यंत्र | राम यंत्र |
| गणेश सिद्ध यंत्र | महामृत्युंजय पूजन यंत्र | द्वादशाक्षर विष्णु मंत्र पूजन यंत्र |
| एकाक्षर गणपति यंत्र | महामृत्युंजय युक्त शिव खप्पर माहा शिव यंत्र | विष्णु बीसा यंत्र |
| हरिद्रा गणेश यंत्र | शिव पंचाक्षरी यंत्र | गरुड पूजन यंत्र |
| कुबेर यंत्र | शिव यंत्र | चिंतामणी यंत्र राज |
| श्री द्वादशाक्षरी रुद्र पूजन यंत्र | अद्वितीय सर्वकाम्य सिद्धि शिव यंत्र | चिंतामणी यंत्र |
| दत्तात्रय यंत्र | नृसिंह पूजन यंत्र | स्वर्णाकर्षणा भैरव यंत्र |
| दत्त यंत्र | पंचदेव यंत्र | हनुमान पूजन यंत्र |
| आपदुद्धारण बटुक भैरव यंत्र | संतान गोपाल यंत्र | हनुमान यंत्र |
| बटुक यंत्र | श्री कृष्ण अष्टाक्षरी मंत्र पूजन यंत्र | संकट मोचन यंत्र |
| व्यंकटेश यंत्र | कृष्ण बीसा यंत्र | वीर साधन पूजन यंत्र |
| कार्तवीर्यार्जुन पूजन यंत्र | सर्व काम प्रद भैरव यंत्र | दक्षिणामूर्ति ध्यानम् यंत्र |

| मनोकामना पूर्ति एवं कष्ट निवारण हेतु विशेष यंत्र | | |
|---|---|---|
| व्यापार वृद्धि कारक यंत्र | अमृत तत्व संजीवनी काया कल्प यंत्र | त्रय तापोंसे मुक्ति दाता बीसा यंत्र |
| व्यापार वृद्धि यंत्र | विजयराज पंचदशी यंत्र | मधुमेह निवारक यंत्र |
| व्यापार वर्धक यंत्र | विद्यायश विभूति राज सम्मान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र | ज्वर निवारण यंत्र |
| व्यापारोन्नति कारी सिद्ध यंत्र | सम्मान दायक यंत्र | रोग कष्ट दरिद्रता नाशक यंत्र |
| भाग्य वर्धक यंत्र | सुख शांति दायक यंत्र | रोग निवारक यंत्र |
| स्वस्तिक यंत्र | बाला यंत्र | तनाव मुक्त बीसा यंत्र |
| सर्व कार्य बीसा यंत्र | बाला रक्षा यंत्र | विद्युत मानस यंत्र |
| कार्य सिद्धि यंत्र | गर्भ स्तम्भन यंत्र | गृह कलह नाशक यंत्र |
| सुख समृद्धि यंत्र | संतान प्राप्ति यंत्र | कलेश हरण बत्तिसा यंत्र |
| सर्व रिद्धि सिद्धि प्रद यंत्र | प्रसूता भय नाशक यंत्र | वशीकरण यंत्र |
| सर्व सुख दायक पैंसठिया यंत्र | प्रसव-कष्टनाशक पंचदशी यंत्र | मोहिनि वशीकरण यंत्र |
| ऋद्धि सिद्धि दाता यंत्र | शांति गोपाल यंत्र | कर्ण पिशाचनी वशीकरण यंत्र |
| सर्व सिद्धि यंत्र | त्रिशूल बीशा यंत्र | वार्ताली स्तम्भन यंत्र |
| साबर सिद्धि यंत्र | पंचदशी यंत्र (बीसा यंत्र युक्त चारों प्रकारके) | वास्तु यंत्र |
| शाबरी यंत्र | बेकारी निवारण यंत्र | श्री मत्स्य यंत्र |
| सिद्धाश्रम यंत्र | षोडशी यंत्र | वाहन दुर्घटना नाशक यंत्र |
| ज्योतिष तंत्र ज्ञान विज्ञान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र | अडसठिया यंत्र | प्रेत-बाधा नाशक यंत्र |
| ब्रहमाण्ड साबर सिद्धि यंत्र | अस्सीया यंत्र | भूतादी व्याधिहरण यंत्र |
| कुण्डलिनी सिद्धि यंत्र | ऋद्धि कारक यंत्र | कष्ट निवारक सिद्धि बीसा यंत्र |
| क्रान्ति और श्रीवर्धक चौंतीसा यंत्र | मन वांछित कन्या प्राप्ति यंत्र | भय नाशक यंत्र |
| श्री क्षेम कल्याणी सिद्धि महा यंत्र | विवाहकर यंत्र | स्वप्न भय निवारक यंत्र |

| | | |
|---|---|---|
| ज्ञान दाता महा यंत्र | लग्न विघ्न निवारक यंत्र | कुदृष्टि नाशक यंत्र |
| काया कल्प यंत्र | लग्न योग यंत्र | श्री शत्रु पराभव यंत्र |
| दीर्धायु अमृत तत्व संजीवनी यंत्र | दरिद्रता विनाशक यंत्र | शत्रु दमनार्णव पूजन यंत्र |

## मंत्र सिद्ध विशेष दैवी यंत्र सूचि

| | |
|---|---|
| आद्य शक्ति दुर्गा बीसा यंत्र (अंबाजी बीसा यंत्र) | सरस्वती यंत्र |
| महान शक्ति दुर्गा यंत्र (अंबाजी यंत्र) | सप्तसती महायंत्र(संपूर्ण बीज मंत्र सहित) |
| नव दुर्गा यंत्र | काली यंत्र |
| नवार्ण यंत्र (चामुंडा यंत्र) | श्मशान काली पूजन यंत्र |
| नवार्ण बीसा यंत्र | दक्षिण काली पूजन यंत्र |
| चामुंडा बीसा यंत्र ( नवग्रह युक्त) | संकट मोचिनी कालिका सिद्धि यंत्र |
| त्रिशूल बीसा यंत्र | खोडियार यंत्र |
| बगला मुखी यंत्र | खोडियार बीसा यंत्र |
| बगला मुखी पूजन यंत्र | अन्नपूर्णा पूजा यंत्र |
| राज राजेश्वरी वांछा कल्पलता यंत्र | एकांक्षी श्रीफल यंत्र |

## मंत्र सिद्ध विशेष लक्ष्मी यंत्र सूचि

| | |
|---|---|
| श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र) | महालक्ष्मयै बीज यंत्र |
| श्री यंत्र (मंत्र रहित) | महालक्ष्मी बीसा यंत्र |
| श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित) | लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र |
| श्री यंत्र (बीसा यंत्र) | लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र |
| श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र | लक्ष्मी गणेश यंत्र |
| श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय) | ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र |
| लक्ष्मी बीसा यंत्र | कनक धारा यंत्र |
| श्री श्री यंत्र (श्रीश्री ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र) | वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र) |
| अंकात्मक बीसा यंत्र | |

| ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस (Gold Plated) | | ताम्र पत्र पर रजत पोलीस (Silver Plated) | | ताम्र पत्र पर (Copper) | |
|---|---|---|---|---|---|
| साईज | मूल्य | साईज | मूल्य | साईज | मूल्य |
| 1” X 1” | 550 | 1” X 1” | 370 | 1” X 1” | 325 |
| 2” X 2” | 910 | 2” X 2” | 640 | 2” X 2” | 550 |
| 3” X 3” | 1450 | 3” X 3” | 1050 | 3” X 3” | 910 |
| 4” X 4” | 2350 | 4” X 4” | 1450 | 4” X 4” | 1225 |
| 6” X 6” | 3700 | 6” X 6” | 2800 | 6” X 6” | 2350 |
| 9” X 9” | 9100 | 9” X 9” | 4600 | 9” X 9” | 4150 |
| 12” X12” | 12700 | 12” X12” | 9100 | 12” X12” | 9100 |

यंत्र के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। >> **Shop Online** | Order Now

GURUTVA KARYALAY
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

# 18 नवम्बर से 24 नवम्बर 2018 साप्ताहिक पंचांग

| दि | वार | माह | पक्ष | तिथि | समाप्ति | नक्षत्र | समाप्ति | योग | समाप्ति | करण | समाप्ति | चंद्र राशि | समाप्ति |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 18 | रवि | कार्तिक | शुक्ल | दशमी | 13:50 | पूर्वाभाद्रपद | 16:30 | हर्षण | 18:47 | गर | 13:50 | कुंभ | 10:04 |
| 19 | सोम | कार्तिक | शुक्ल | एकादशी | 14:43 | उत्तरा-भाद्रपद | 17:54 | वज्र | 18:18 | विष्टि | 14:43 | मीन | - |
| 20 | मंगल | कार्तिक | शुक्ल | द्वादशी | 14:50 | रेवति | 18:33 | सिद्धि | 17:13 | बालव | 14:50 | मीन | 18:34 |
| 21 | बुध | कार्तिक | शुक्ल | त्रयोदशी | 14:13 | अश्विनी | 18:30 | व्यतिपात | 15:35 | तैतिल | 14:13 | मेष | - |
| 22 | गुरु | कार्तिक | शुक्ल | चतुर्दशी | 12:57 | भरणी | 17:50 | वरियान | 13:26 | वणिज | 12:57 | मेष | 23:36 |
| 23 | शुक्र | कार्तिक | शुक्ल | पूर्णिमा | 11:09 | कृतिका | 16:40 | परिग्रह | 10:52 | बव | 11:09 | वृषभ | - |
| 24 | शनि | मार्गशीर्ष | कृष्ण | एकम | 08:57 | रोहिणि | 15:09 | शिव | 07:59 | कौलव | 08:57 | वृषभ | - |

# 18 नवम्बर से 24 नवम्बर 2018 साप्ताहिक व्रत-पर्व-त्यौहार

| दि | वार | माह | पक्ष | तिथि | समाप्ति | प्रमुख व्रत-त्योहार |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 18 | रवि | कार्तिक | शुक्ल | दशमी | 13:50 | आशा दशमी, कंशवध लीला महोत्सव (मथुरा), |
| 19 | सोम | कार्तिक | शुक्ल | एकादशी | 14:43 | श्रीहरि प्रबोधिनी एकादशी, देवउठनी ग्यारस, देव उठी अग्यारस, देवोत्थान उत्सव, विष्णु त्रिरात्र पूर्ण, चातुर्मास व्रत नियम समाप्त, भीष्मपंचक प्रारंभ, तुलसी विवाह, कालीदास जयंती, |
| 20 | मंगल | कार्तिक | शुक्ल | द्वादशी | 14:50 | भोम-प्रदोष व्रत, दामोदर द्वादशी (ब्रज), श्यामबाबा द्वादशी, गरुड़ द्वादशी (ओड़ीसा), मत्स्य द्वादशी, मेला खाटूश्याम (राज.), |
| 21 | बुध | कार्तिक | शुक्ल | त्रयोदशी | 14:13 | वैकुण्ठ चतुर्दशी व्रत, महानिशीथकाल में महाविष्णु पूजा, रात्रि के अंतिम प्रहर में अरुणोदयकाल में मणिर्किणका-स्नान, |
| 22 | गुरु | कार्तिक | शुक्ल | चतुर्दशी | 12:57 | व्रत हेतु उत्तम कृत्तिका नक्षत्रयुता कार्तिकी पूर्णिमा, देव-दीपावली, देव दीवाळी, तुलसी विवाहोत्सव समाप्त, सामा-विसर्जन (मिथिलांचल), पुष्कर मेला (राज.), |
| 23 | शुक्र | कार्तिक | शुक्ल | पूर्णिमा | 11:09 | स्नान-दान हेतु उत्तम कृत्तिका नक्षत्रयुता कार्तिकी पूर्णिमा, श्रीगुरु नानकदेव जयंती, निम्बार्काचार्य जयंती, भीष्म पंचक पूर्ण, |
| 24 | शनि | मार्गशीर्ष | कृष्ण | एकम | 08:57 | गोप मास प्रारंभ, कात्यायनी मासिक पूजा शुरू, |

# राशि रत्न

| मेष राशि: | वृषभ राशि: | मिथुन राशि: | कर्क राशि: | सिंह राशि: | कन्या राशि: |
|---|---|---|---|---|---|
| मूंगा | हीरा | पन्ना | मोती | माणेक | पन्ना |
| **Red Coral (Special)** | **Diamond (Special)** | **Green Emerald (Special)** | **Naturel Pearl (Special)** | **Ruby (Old Berma) (Special)** | **Green Emerald (Special)** |
| 5.25" Rs. 1050<br>6.25" Rs. 1250<br>7.25" Rs. 1450<br>8.25" Rs. 1800<br>9.25" Rs. 2100<br>10.25" Rs. 2800 | 10 cent Rs. 4100<br>20 cent Rs. 8200<br>30 cent Rs. 12500<br>40 cent Rs. 18500<br>50 cent Rs. 23500 | 5.25" Rs. 9100<br>6.25" Rs. 12500<br>7.25" Rs. 14500<br>8.25" Rs. 19000<br>9.25" Rs. 23000<br>10.25" Rs. 28000 | 5.25" Rs. 910<br>6.25" Rs. 1250<br>7.25" Rs. 1450<br>8.25" Rs. 1900<br>9.25" Rs. 2300<br>10.25" Rs. 2800 | 2.25" Rs. 12500<br>3.25" Rs. 15500<br>4.25" Rs. 28000<br>5.25" Rs. 46000<br>6.25" Rs. 82000 | 5.25" Rs. 9100<br>6.25" Rs. 12500<br>7.25" Rs. 14500<br>8.25" Rs. 19000<br>9.25" Rs. 23000<br>10.25" Rs. 28000 |
| ** All Weight In Rati | All Diamond are Full White Colour. | ** All Weight In Rati | ** All Weight In Rati | ** All Weight In Rati | ** All Weight In Rati |

| तुला राशि: | वृश्चिक राशि: | धनु राशि: | मकर राशि: | कुंभ राशि: | मीन राशि: |
|---|---|---|---|---|---|
| हीरा | मूंगा | पुखराज | नीलम | नीलम | पुखराज |
| **Diamond (Special)** | **Red Coral (Special)** | **Y.Sapphire (Special)** | **B.Sapphire (Special)** | **B.Sapphire (Special)** | **Y.Sapphire (Special)** |
| 10 cent Rs. 4100<br>20 cent Rs. 8200<br>30 cent Rs. 12500<br>40 cent Rs. 18500<br>50 cent Rs. 23500 | 5.25" Rs. 1050<br>6.25" Rs. 1250<br>7.25" Rs. 1450<br>8.25" Rs. 1800<br>9.25" Rs. 2100<br>10.25" Rs. 2800 | 5.25" Rs. 30000<br>6.25" Rs. 37000<br>7.25" Rs. 55000<br>8.25" Rs. 73000<br>9.25" Rs. 91000<br>10.25" Rs.108000 | 5.25" Rs. 30000<br>6.25" Rs. 37000<br>7.25" Rs. 55000<br>8.25" Rs. 73000<br>9.25" Rs. 91000<br>10.25" Rs.108000 | 5.25" Rs. 30000<br>6.25" Rs. 37000<br>7.25" Rs. 55000<br>8.25" Rs. 73000<br>9.25" Rs. 91000<br>10.25" Rs.108000 | 5.25" Rs. 30000<br>6.25" Rs. 37000<br>7.25" Rs. 55000<br>8.25" Rs. 73000<br>9.25" Rs. 91000<br>10.25" Rs.108000 |
| All Diamond are Full White Colour. | ** All Weight In Rati | ** All Weight In Rati | ** All Weight In Rati | ** All Weight In Rati | ** All Weight In Rati |

* उपयोक्त वजन और मूल्य से अधिक और कम वजन और मूल्य के रत्न एवं उपरत्न भी हमारे यहा व्यापारी मूल्य पर उप्लब्ध हैं।

>> Shop Online | Order Now

# श्रीकृष्ण बीसा यंत्र

किसी भी व्यक्ति का जीवन तब आसान बन जाता हैं जब उसके चारों और का माहोल उसके अनुरुप उसके वश में हों। जब कोई व्यक्ति का आकर्षण दुसरो के उपर एक चुम्बकीय प्रभाव डालता हैं, तब लोग उसकी सहायता एवं सेवा हेतु तत्पर होते है और उसके प्रायः सभी कार्य बिना अधिक कष्ट व परेशानी से संपन्न हो जाते हैं। आज के भौतिकता वादि युग में हर व्यक्ति के लिये दूसरो को अपनी और खीचने हेतु एक प्रभावशालि चुंबकत्व को कायम रखना अति आवश्यक हो जाता हैं। आपका आकर्षण और व्यक्तित्व आपके चारो ओर से लोगों को आकर्षित करे इस लिये सरल उपाय हैं, **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र**। क्योकि भगवान श्री कृष्ण एक अलौकिव एवं दिवय चुंबकीय व्यक्तित्व के धनी थे। इसी कारण से **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन एवं दर्शन से आकर्षक व्यक्तित्व प्राप्त होता हैं।

**श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के साथ व्यक्तिको दृढ इच्छा शक्ति एवं उर्जा प्राप्त होती हैं, जिस्से व्यक्ति हमेशा एक भीड में हमेशा आकर्षण का केंद्र रहता हैं।

यदि किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिभा व आत्मविश्वास के स्तर में वृद्धि, अपने मित्रो व परिवारजनो के बिच में रिश्तो में सुधार करने की ईच्छा होती हैं उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** का पूजन एक सरल व सुलभ माध्यम साबित हो सकता हैं।

**श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** पर अंकित शक्तिशाली विशेष रेखाएं, बीज मंत्र एवं अंको से व्यक्ति को अद्भुत आंतरिक शक्तियां प्राप्त होती हैं जो व्यक्ति को सबसे आगे एवं सभी क्षेत्रो में अग्रणिय बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

**श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन व नियमित दर्शन के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त कर समाज में स्वयं का अद्वितीय स्थान स्थापित करें।

**श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** अलौकिक ब्रह्मांडीय उर्जा का संचार करता हैं, जो एक प्राकृत्ति माध्यम से व्यक्ति के भीतर सद्भावना, समृद्धि, सफलता, उत्तम स्वास्थ्य, योग और ध्यान के लिये एक शक्तिशाली माध्यम हैं!

- **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन से व्यक्ति के सामाजिक मान-सम्मान व पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं।
- विद्वानो के मतानुसार **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के मध्यभाग पर ध्यान योग केंद्रित करने से व्यक्ति कि चेतना शक्ति जाग्रत होकर शीघ्र उच्च स्तर को प्राप्तहोती हैं।
- जो पुरुषों और महिला अपने साथी पर अपना प्रभाव डालना चाहते हैं और उन्हें अपनी और आकर्षित करना चाहते हैं। उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** उत्तम उपाय सिद्ध हो सकता हैं।
- पति-पत्नी में आपसी प्रम की वृद्धि और सुखी दाम्पत्य जीवन के लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** लाभदायी होता हैं।

मूल्य:- Rs. 910 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध >> Shop Online

## श्रीकृष्ण बीसा कवच

श्रीकृष्ण बीसा कवच को केवल विशेष शुभ मुहुर्त में निर्माण किया जाता हैं। कवच को विद्वान कर्मकांडी ब्राहमणों द्वारा शुभ मुहुर्त में शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त करके निर्माण किया जाता हैं। जिस के फल स्वरुप धारण करता व्यक्ति को शीघ्र पूर्ण लाभ प्राप्त होता हैं। कवच को गले में धारण करने से वहं अत्यंत प्रभाव शाली होता हैं। गले में धारण करने से कवच हमेशा हृदय के पास रहता हैं जिस्से व्यक्ति पर उसका लाभ अति तीव्र एवं शीघ्र ज्ञात होने लगता हैं।

**मूलय मात्र: 2350** >>Order Now

# जैन धर्मके विशिष्ट यंत्रो की सूची

| | |
|---|---|
| श्री चौबीस तीर्थंकरका महान प्रभावित चमत्कारी यंत्र | श्री एकाक्षी नारियेर यंत्र |
| श्री चोबीस तीर्थंकर यंत्र | सर्वतो भद्र यंत्र |
| कल्पवृक्ष यंत्र | सर्व संपत्तिकर यंत्र |
| चिंतामणी पार्श्वनाथ यंत्र | सर्वकार्य-सर्व मनोकामना सिद्धिअ यंत्र (१३० सर्वतोभद्र यंत्र) |
| चिंतामणी यंत्र (पैंसठिया यंत्र) | ऋषि मंडल यंत्र |
| चिंतामणी चक्र यंत्र | जगदवल्लभ कर यंत्र |
| श्री चक्रेश्वरी यंत्र | ऋद्धि सिद्धि मनोकामना मान सम्मान प्राप्ति यंत्र |
| श्री घंटाकर्ण महावीर यंत्र | ऋद्धि सिद्धि समृद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र |
| श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र<br>(अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र) | विषम विष निग्रह कर यंत्र |
| श्री पद्मावती यंत्र | क्षुद्रो पद्रव निर्नाशन यंत्र |
| श्री पद्मावती बीसा यंत्र | बृहच्चक्र यंत्र |
| श्री पार्श्वपद्मावती ह्रींकार यंत्र | वंध्या शब्दापह यंत्र |
| पद्मावती व्यापार वृद्धि यंत्र | मृतवत्सा दोष निवारण यंत्र |
| श्री धरणेन्द्र पद्मावती यंत्र | कांक वंध्यादोष निवारण यंत्र |
| श्री पार्श्वनाथ ध्यान यंत्र | बालग्रह पीडा निवारण यंत्र |
| श्री पार्श्वनाथ प्रभुका यंत्र | लधुदेव कुल यंत्र |
| भक्तामर यंत्र (गाथा नंबर १ से ४४ तक) | नवगाथात्मक उवसग्गहरं स्तोत्रका विशिष्ट यंत्र |
| मणिभद्र यंत्र | उवसग्गहरं यंत्र |
| श्री यंत्र | श्री पंच मंगल महाश्रृत स्कंध यंत्र |
| श्री लक्ष्मी प्राप्ति और व्यापार वर्धक यंत्र | ह्रींकार मय बीज मंत्र |
| श्री लक्ष्मीकर यंत्र | वर्धमान विद्या पट्ट यंत्र |
| लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र | विद्या यंत्र |
| महाविजय यंत्र | सौभाग्यकर यंत्र |
| विजयराज यंत्र | डाकिनी, शाकिनी, भय निवारक यंत्र |
| विजय पतका यंत्र | भूतादि निग्रह कर यंत्र |
| विजय यंत्र | ज्वर निग्रह कर यंत्र |
| सिद्धचक्र महायंत्र | शाकिनी निग्रह कर यंत्र |
| दक्षिण मुखाय शंख यंत्र | आपत्ति निवारण यंत्र |
| दक्षिण मुखाय यंत्र | शत्रुमुख स्तंभन यंत्र |

# श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र

## (अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)

घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र को स्थापीत करने से साधक की सर्व मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सर्व प्रकार के रोग भूत-प्रेत आदि उपद्रव से रक्षण होता हैं। जहरीले और हिंसक प्राणीं से संबंधित भय दूर होते हैं। अग्नि भय, चोरभय आदि दूर होते हैं।

दुष्ट व असुरी शक्तियों से उत्पन्न होने वाले भय से यंत्र के प्रभाव से दूर हो जाते हैं।

यंत्र के पूजन से साधक को धन, सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य, संतत्ति-संपत्ति आदि की प्राप्ति होती हैं। साधक की सभी प्रकार की सात्विक इच्छाओं की पूर्ति होती हैं।

यदि किसी परिवार या परिवार के सदस्यो पर वशीकरण, मारण, उच्चाटन इत्यादि जादू-टोने वाले प्रयोग किये गयें होतो इस यंत्र के प्रभाव से स्वतः नष्ट हो जाते हैं और भविष्य में यदि कोई प्रयोग करता हैं तो रक्षण होता हैं।

कुछ जानकारो के श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र से जुडे अद्भुत अनुभव रहे हैं। यदि घर में श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र स्थापित किया हैं और यदि कोई इर्षा, लोभ, मोह या शत्रुतावश यदि अनुचित कर्म करके किसी भी उद्देश्य से साधक को परेशान करने का प्रयास करता हैं तो यंत्र के प्रभाव से संपूर्ण परिवार का रक्षण तो होता ही हैं, कभी-कभी शत्रु के द्वारा किया गया अनुचित कर्म शत्रु पर ही उपर उलट वार होते देखा हैं। **मूल्य:- Rs. 2350 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध**

>> Shop Online | Order Now

## 18 नवम्बर से 24 नवम्बर 2018 -विशेष योग

| कार्य सिद्धि योग | | | |
|---|---|---|---|
| 18 | सांय 04:32 से अगले दिन प्रातः 05:55 तक | 24 | प्रातः 05:59 से दोपहर 03:11 तक |
| 20 | सांय 06:35 से अगले दिन प्रातः 05:57 तक | | |
| **द्विपुष्कर योग (दौ गुना फल दायक )** | | | |
| 24 | सांय 03:11 से अगले दिन प्रातः 06:37 तक | | |
| **विघ्नकारक भद्रा** | | | |
| 19 | रात 02:07 से 19 नवंबर दोपहर 02:30 तक (पृथ्वी) | 22 | दोपहर 12:54 से रात 12:05 तक (स्वर्ग) |

**योग फल :**

- कार्य सिद्धि योग मे किये गये शुभ कार्य मे निश्चित सफलता प्राप्त होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- द्विपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ दोगुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- शास्त्रोंक्त मत से विघ्नकारक भद्रा योग में शुभ कार्य करना वर्जित हैं।

## दैनिक शुभ एवं अशुभ समय ज्ञान तालिका

| | गुलिक काल (शुभ) | यम काल (अशुभ) | राहु काल (अशुभ) |
|---|---|---|---|
| वार | समय अवधि | समय अवधि | समय अवधि |
| रविवार | 03:00 से 04:30 | 12:00 से 01:30 | 04:30 से 06:00 |
| सोमवार | 01:30 से 03:00 | 10:30 से 12:00 | 07:30 से 09:00 |
| मंगलवार | 12:00 से 01:30 | 09:00 से 10:30 | 03:00 से 04:30 |
| बुधवार | 10:30 से 12:00 | 07:30 से 09:00 | 12:00 से 01:30 |
| गुरुवार | 09:00 से 10:30 | 06:00 से 07:30 | 01:30 से 03:00 |
| शुक्रवार | 07:30 से 09:00 | 03:00 से 04:30 | 10:30 से 12:00 |
| शनिवार | 06:00 से 07:30 | 01:30 से 03:00 | 09:00 से 10:30 |

## दिन के चौघडिये

| समय | रविवार | सोमवार | मंगलवार | बुधवार | गुरुवार | शुक्रवार | शनिवार |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 06:00 से 07:30 | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चल | काल |
| 07:30 से 09:00 | चल | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ |
| 09:00 से 10:30 | लाभ | शुभ | चल | काल | उद्वेग | अमृत | रोग |
| 10:30 से 12:00 | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चल | काल | उद्वेग |
| 12:00 से 01:30 | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चल |
| 01:30 से 03:00 | शुभ | चल | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ |
| 03:00 से 04:30 | रोग | लाभ | शुभ | चल | काल | उद्वेग | अमृत |
| 04:30 से 06:00 | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चल | काल |

## रात के चौघडिये

| समय | रविवार | सोमवार | मंगलवार | बुधवार | गुरुवार | शुक्रवार | शनिवार |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 06:00 से 07:30 | शुभ | चल | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ |
| 07:30 से 09:00 | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चल | काल | उद्वेग |
| 09:00 से 10:30 | चल | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ |
| 10:30 से 12:00 | रोग | लाभ | शुभ | चल | काल | उद्वेग | अमृत |
| 12:00 से 01:30 | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चल |
| 01:30 से 03:00 | लाभ | शुभ | चल | काल | उद्वेग | अमृत | रोग |
| 03:00 से 04:30 | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चल | काल |
| 04:30 से 06:00 | शुभ | चल | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ |

शास्त्रोक्त मत के अनुसार यदि किसी भी कार्य का प्रारंभ शुभ मुहूर्त या शुभ समय पर किया जाये तो कार्य में सफलता प्राप्त होने कि संभावना ज्यादा प्रबल हो जाती हैं। इस लिये दैनिक शुभ समय चौघड़िया देखकर प्राप्त किया जा सकता हैं।

**नोट:** प्रायः दिन और रात्रि के चौघड़िये कि गिनती क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त से कि जाती हैं। प्रत्येक चौघड़िये कि अवधि 1 घंटा 30 मिनिट अर्थात डेढ़ घंटा होती हैं। समय के अनुसार चौघड़िये को शुभाशुभ तीन भागों में बांटा जाता हैं, जो क्रमशः शुभ, मध्यम और अशुभ हैं।

## चौघडिये के स्वामी ग्रह

| शुभ चौघडिया | | मध्यम चौघडिया | | अशुभ चौघड़िया | |
|---|---|---|---|---|---|
| चौघडिया | स्वामी ग्रह | चौघडिया | स्वामी ग्रह | चौघडिया | स्वामी ग्रह |
| शुभ | गुरु | चर | शुक्र | उद्वेग | सूर्य |
| अमृत | चंद्रमा | | | काल | शनि |
| लाभ | बुध | | | रोग | मंगल |

* हर कार्य के लिये शुभ/अमृत/लाभ का चौघड़िया उत्तम माना जाता हैं।

* हर कार्य के लिये चल/काल/रोग/उद्वेग का चौघड़िया उचित नहीं माना जाता।

| दिन कि होरा - सूर्योदय से सूर्यास्त तक | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वार | 1.घं | 2.घं | 3.घं | 4.घं | 5.घं | 6.घं | 7.घं | 8.घं | 9.घं | 10.घं | 11.घं | 12.घं |
| रविवार | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि |
| सोमवार | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य |
| मंगलवार | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र |
| बुधवार | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल |
| गुरुवार | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध |
| शुक्रवार | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु |
| शनिवार | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र |
| रात कि होरा – सूर्यास्त से सूर्योदय तक | | | | | | | | | | | | |
| रविवार | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध |
| सोमवार | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु |
| मंगलवार | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र |
| बुधवार | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि |
| गुरुवार | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य |
| शुक्रवार | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र |
| शनिवार | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल |

होरा मुहूर्त को कार्य सिद्धि के लिए पूर्ण फलदायक एवं अचूक माना जाता हैं, दिन-रात के २४ घंटों में शुभ-अशुभ समय को समय से पूर्व ज्ञात कर अपने कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग करना चाहिये।

**विद्वानो के मत से इच्छित कार्य सिद्धि के लिए ग्रह से संबंधित होरा का चुनाव करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।**

- सूर्य कि होरा सरकारी कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- चंद्रमा कि होरा सभी कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- मंगल कि होरा कोर्ट-कचेरी के कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- बुध कि होरा विद्या-बुद्धि अर्थात पढाई के लिये उत्तम होती हैं।
- गुरु कि होरा धार्मिक कार्य एवं विवाह के लिये उत्तम होती हैं।
- शुक्र कि होरा यात्रा के लिये उत्तम होती हैं।
- शनि कि होरा धन-द्रव्य संबंधित कार्य के लिये उत्तम होती हैं।

# सर्व रोगनाशक यंत्र/कवच

मनुष्य अपने जीवन के विभिन्न समय पर किसी ना किसी साध्य या असाध्य रोग से ग्रस्त होता हैं। उचित उपचार से ज्यादातर साध्य रोगो से तो मुक्ति मिल जाती हैं, लेकिन कभी-कभी साध्य रोग होकर भी असाध्य होजाते हैं, या कोइ असाध्य रोग से ग्रसित होजाते हैं। हजारो लाखो रुपये खर्च करने पर भी अधिक लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। डॉक्टर द्वारा दिजाने वाली दवाईया अल्प समय के लिये कारगर साबित होती हैं, एसी स्थिती में लाभ प्राप्ति के लिये व्यक्ति एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर के चक्कर लगाने को बाध्य हो जाता हैं।

भारतीय ऋषीयोने अपने योग साधना के प्रताप से रोग शांति हेतु विभिन्न आयुर्वेर औषधो के अतिरिक्त यंत्र, मंत्र एवं तंत्र का उल्लेख अपने ग्रंथो में कर मानव जीवन को लाभ प्रदान करने का सार्थक प्रयास हजारो वर्ष पूर्व किया था। बुद्धिजीवो के मत से जो व्यक्ति जीवनभर अपनी दिनचर्या पर नियम, संयम रख कर आहार ग्रहण करता हैं, एसे व्यक्ति को विभिन्न रोग से ग्रसित होने की संभावना कम होती हैं। लेकिन आज के बदलते युग में एसे व्यक्ति भी भयंकर रोग से ग्रस्त होते दिख जाते हैं। क्योकि समग्र संसार काल के अधीन हैं। एवं मृत्यु निश्चित हैं जिसे विधाता के अलावा और कोई टाल नहीं सकता, लेकिन रोग होने कि स्थिती में व्यक्ति रोग दूर करने का प्रयास तो अवश्य कर सकता हैं। इस लिये **यंत्र मंत्र एवं तंत्र** के कुशल जानकार से योग्य मार्गदर्शन लेकर व्यक्ति रोगो से मुक्ति पाने का या उसके प्रभावो को कम करने का प्रयास भी अवश्य कर सकता हैं।

**ज्योतिष** विद्या के कुशल जानकर भी काल पुरुषकी गणना कर अनेक रोगो के अनेको रहस्य को उजागर कर सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से रोग के मूलको पकडने मे सहयोग मिलता हैं, जहा आधुनिक चिकित्सा शास्त्र अक्षम होजाता हैं वहा ज्योतिष शास्त्र द्वारा रोग के मूल(जड़) को पकड कर उसका निदान करना लाभदायक एवं उपायोगी सिद्ध होता हैं।

हर व्यक्ति में लाल रंगकी कोशिकाए पाइ जाती हैं, जिसका नियमीत विकास क्रम बद्ध तरीके से होता रहता हैं। जब इन कोशिकाओ के क्रम में परिवर्तन होता है या विखंडिन होता हैं तब व्यक्ति के शरीर में स्वास्थ्य संबंधी विकारो उत्पन्न होते हैं। एवं इन कोशिकाओ का संबंध नव ग्रहो के साथ होता हैं। जिस्से रोगो के होने के कारण व्यक्ति के जन्मांग से दशा-महादशा एवं ग्रहो कि गोचर स्थिती से प्राप्त होता हैं।

सर्व रोग निवारण कवच एवं महामृत्युंजय यंत्र के माध्यम से व्यक्ति के जन्मांग में स्थित कमजोर एवं पीडित ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने का कार्य सरलता पूर्वक किया जासकता हैं। जेसे हर व्यक्ति को ब्रहमांड कि उर्जा एवं पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल प्रभावीत कर्ता हैं ठिक उसी प्रकार कवच एवं यंत्र के माध्यम से ब्रहमांड कि उर्जा के सकारात्मक प्रभाव से व्यक्ति को सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती हैं जिस्से रोग के प्रभाव को कम कर रोग मुक्त करने हेतु सहायता मिलती हैं।

रोग निवारण हेतु महामृत्युंजय मंत्र एवं यंत्र का बडा महत्व हैं। जिस्से हिन्दू संस्कृति का प्रायः हर व्यक्ति महामृत्युंजय मंत्र से परिचित हैं।

**कवच के लाभ :**

- एसा शास्त्रोक्त वचन हैं जिस घर में महामृत्युंजय यंत्र स्थापित होता हैं वहा निवास कर्ता हो नाना प्रकार कि आधि-व्याधि-उपाधि से रक्षा होती हैं।
- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच किसी भी उम्र एवं जाति धर्म के लोग चाहे स्त्री हो या पुरुष धारण कर सकते हैं।
- जन्मांगमें अनेक प्रकारके खराब योगो और खराब ग्रहो कि प्रतिकूलता से रोग उतपन्न होते हैं।
- कुछ रोग संक्रमण से होते हैं एवं कुछ रोग खान-पान कि अनियमितता और अशुद्धतासे उत्पन्न होते हैं। कवच एवं यंत्र द्वारा एसे अनेक प्रकार के खराब योगो को नष्ट कर, स्वास्थ्य लाभ और शारीरिक रक्षण प्राप्त करने हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र सर्व उपयोगी होता हैं।
- आज के भौतिकता वादी आधुनिक युगमे अनेक एसे रोग होते हैं, जिसका उपचार ओपरेशन और दवासे भी कठिन हो जाता हैं। कुछ रोग एसे होते हैं जिसे बताने में लोग हिचकिचाते हैं शरम अनुभव करते हैं एसे रोगो को रोकने हेतु एवं उसके उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र लाभादायि सिद्ध होता हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति कि जेसे-जेसे आयु बढती हैं वैसे-वसै उसके शरीर कि ऊर्जा कम होती जाती हैं। जिसके साथ अनेक प्रकार के विकार पैदा होने लगते हैं एसी स्थिती में उपचार हेतु सर्वरोगनाशक कवच एवं यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस घर में पिता-पुत्र, माता-पुत्र, माता-पुत्री, या दो भाई एक हि नक्षत्रमे जन्म लेते हैं, तब उसकी माता के लिये अधिक कष्टदायक स्थिती होती हैं। उपचार हेतु महामृत्युंजय यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस व्यक्ति का जन्म परिधि योगमे होता हैं उन्हे होने वाले मृत्यु तुल्य कष्ट एवं होने वाले रोग, चिंता में उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र शुभ फलप्रद होता हैं।

**नोट:-** पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच एवं यंत्र के बारे में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।



## Declaration Notice

- We do not accept liability for any out of date or incorrect information.
- We will not be liable for your any indirect consequential loss, loss of profit,
- If you will cancel your order for any article we can not any amount will be refunded or Exchange.
- We are keepers of secrets. We honour our clients' rights to privacy and will release no information about our any other clients' transactions with us.
- Our ability lies in having learned to read the subtle spiritual energy, Yantra, mantra and promptings of the natural and spiritual world.
- Our skill lies in communicating clearly and honestly with each client.
- Our all kawach, yantra and any other article are prepared on the Principle of Positiv energy, our Article dose not produce any bad energy.

## Our Goal

- Here Our goal has The classical Method-Legislation with Proved by specific with fiery chants prestigious full consciousness (Puarn Praan Pratisthit) Give miraculous powers & Good effect All types of Yantra, Kavach, Rudraksh, precious and semi precious Gems stone deliver on your door step.

# मंत्र सिद्ध कवच

मंत्र सिद्ध कवच को विशेष प्रयोजन में उपयोग के लिए और शीघ्र प्रभाव शाली बनाने के लिए तेजस्वी मंत्रो द्वारा शुभ महूर्त में शुभ दिन को तैयार किये जाते है। अलग-अलग कवच तैयार करने केलिए अलग-अलग तरह के मंत्रो का प्रयोग किया जाता है।

❖ क्यों चुने मंत्र सिद्ध कवच? ❖ उपयोग में आसान कोई प्रतिबन्ध नहीं ❖ कोई विशेष निति-नियम नहीं ❖ कोई बुरा प्रभाव नहीं

## मंत्र सिद्ध कवच सूचि

| | | | |
|---|---|---|---|
| राज राजेश्वरी कवच<br>Raj Rajeshwari Kawach …………………………… | 11000 | विष्णु बीसा कवच<br>Vishnu Visha Kawach ………………………………… | 2350 |
| अमोघ महामृत्युंजय कवच<br>Amogh Mahamrutyunjay Kawach …………………… | 10900 | रामभद्र बीसा कवच<br>Ramabhadra Visha Kawach ……………………………… | 2350 |
| दस महाविद्या कवच<br>Dus Mahavidhya Kawach ……………………………… | 7300 | कुबेर बीसा कवच<br>Kuber Visha Kawach ……………………………………… | 2350 |
| श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि प्रद कवच<br>Shri Ghantakarn Mahavir Sarv Siddhi Prad Kawach.. | 6400 | गरुड बीसा कवच<br>Garud Visha Kawach ……………………………………… | 2350 |
| सकल सिद्धि प्रद गायत्री कवच<br>Sakal Siddhi Prad Gayatri Kawach ………………….. | 6400 | लक्ष्मी बीसा कवच<br>Lakshmi Visha Kawach …………………………………… | 2350 |
| नवदुर्गा शक्ति कवच<br>Navdurga Shakiti Kawach ……………………………… | 6400 | सिंह बीसा कवच<br>Sinha Visha Kawach ……………………………………… | 2350 |
| रसायन सिद्धि कवच<br>Rasayan Siddhi Kawach ……………………………….. | 6400 | नर्वाण बीसा कवच<br>Narvan Visha Kawach ……………………………………. | 2350 |
| पंचदेव शक्ति कवच<br>Pancha Dev Shakti Kawach ……………………………. | 6400 | संकट मोचिनी कालिका सिद्धि कवच<br>Sankat Mochinee Kalika Siddhi Kawach …………… | 2350 |
| सर्व कार्य सिद्धि कवच<br>Sarv Karya Siddhi Kawach …………………………….. | 5500 | राम रक्षा कवच<br>Ram Raksha Kawach ……………………………………. | 2350 |
| सुवर्ण लक्ष्मी कवच<br>Suvarn Lakshmi Kawach ……………………………… | 4600 | नारायण रक्षा कवच<br>Narayan Raksha Kavach ………………………………... | 2350 |
| स्वर्णाकर्षण भैरव कवच<br>Swarnakarshan Bhairav Kawach ……………………… | 4600 | हनुमान रक्षा कवच<br>Hanuman Raksha Kawach ……………………………….. | 2350 |
| कालसर्प शांति कवच<br>Kalsharp Shanti Kawach ………………………………. | 3700 | भैरव रक्षा कवच<br>Bhairav Raksha Kawach ……………………………………. | 2350 |
| विलक्षण सकल राज वशीकरण कवच<br>Vilakshan Sakal Raj Vasikaran Kawach …………… | 3250 | शनि साड़ेसाती और ढ़ैया कष्ट निवारण कवच<br>Shani Sadesatee aur Dhaiya Kasht Nivaran Kawach ….. | 2350 |
| इष्ट सिद्धि कवच<br>Isht Siddhi Kawach ……………………………………… | 2800 | श्रापित योग निवारण कवच<br>Sharapit Yog Nivaran Kawach …………………………. | 1900 |
| परदेश गमन और लाभ प्राप्ति कवच<br>Pardesh Gaman Aur Labh Prapti Kawach ……….…. | 2350 | विष योग निवारण कवच<br>Vish Yog Nivaran Kawach ………………………………. | 1900 |
| श्रीदुर्गा बीसा कवच<br>Durga Visha Kawach ………………………………………. | 2350 | सर्वजन वशीकरण कवच<br>Sarvjan Vashikaran Kawach …………………………… | 1450 |
| कृष्ण बीसा कवच<br>Krushna Bisa Kawach ……………………………………. | 2350 | सिद्धि विनायक कवच<br>Siddhi Vinayak Ganapati Kawach ………………….. | 1450 |
| अष्ट विनायक कवच<br>Asht Vinayak Kawach ……………………………………. | 2350 | सकल सम्मान प्राप्ति कवच<br>Sakal Samman Praapti Kawach ………………………. | 1450 |
| आकर्षण वृद्धि कवच<br>Aakarshan Vruddhi Kawach …………………………… | 1450 | स्वप्न भय निवारण कवच<br>Swapna Bhay Nivaran Kawach ……………………….. | 1050 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| वशीकरण नाशक कवच<br>Vasikaran Nashak Kawach …….……………………….. | 1450 | सरस्वती कवच (कक्षा +10 के लिए)<br>Saraswati Kawach (For Class +10) ………………….. | 1050 |
| प्रीति नाशक कवच<br>Preeti Nashak Kawach …….……………………….. | 1450 | सरस्वती कवच (कक्षा 10 तकके लिए)<br>Saraswati Kawach (For up to Class 10) …………….. | 910 |
| चंडाल योग निवारण कवच<br>Chandal Yog Nivaran Kawach …….…………………. | 1450 | वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए)<br>Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) ……………. | 1250 |
| ग्रहण योग निवारण कवच<br>Grahan Yog Nivaran Kawach …….………………….. | 1450 | पत्नी वशीकरण कवच<br>Patni Vasikaran Kawach ……………………………... | 820 |
| मांगलिक योग निवारण कवच (कुजा योग )<br>Magalik Yog Nivaran Kawach (Kuja Yoga) ………… | 1450 | पति वशीकरण कवच<br>Pati Vasikaran Kawach ………………………………. | 820 |
| अष्ट लक्ष्मी कवच<br>Asht Lakshmi Kawach …….…………………………... | 1250 | वशीकरण कवच ( 1 व्यक्ति के लिए)<br>Vashikaran Kawach (For 1 Person) …………………… | 820 |
| आकस्मिक धन प्राप्ति कवच<br>Akashmik Dhan Prapti Kawach …….……………….. | 1250 | सुदर्शन बीसा कवच<br>Sudarshan Visha Kawach …….……………………..…... | 910 |
| स्पे.व्यापार वृद्धि कवच<br>Special Vyapar Vruddhi Kawach …….……………… | 1250 | महा सुदर्शन कवच<br>Mahasudarshan Kawach …….………………...………… | 910 |
| धन प्राप्ति कवच<br>Dhan Prapti Kawach …….…………………………... | 1250 | तंत्र रक्षा कवच<br>Tantra Raksha Kawach ……………………………….. | 910 |
| कार्य सिद्धि कवच<br>Karya Siddhi Kawach …….……………………….. | 1250 | वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए)<br>Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) ……………. | 1250 |
| भूमिलाभ कवच<br>Bhumilabh Kawach …….……………………………. | 1250 | पत्नी वशीकरण कवच<br>Patni Vasikaran Kawach ……………………………... | 820 |
| नवग्रह शांति कवच<br>Navgrah Shanti Kawach …….…………………….. | 1250 | पति वशीकरण कवच<br>Pati Vasikaran Kawach ………………………………. | 820 |
| संतान प्राप्ति कवच<br>Santan Prapti Kawach …….……………………….. | 1250 | वशीकरण कवच ( 1 व्यक्ति के लिए)<br>Vashikaran Kawach (For 1 Person) …………………… | 820 |
| कामदेव कवच<br>Kamdev Kawach …….…………………………….. | 1250 | सुदर्शन बीसा कवच<br>Sudarshan Visha Kawach …….……………………..…... | 910 |
| हंस बीसा कवच<br>Hans Visha Kawach …….……………………………... | 1250 | महा सुदर्शन कवच<br>Mahasudarshan Kawach …….………………...………… | 910 |
| पदौन्नति कवच<br>Padounnati Kawach …….……………………………. | 1250 | तंत्र रक्षा कवच<br>Tantra Raksha Kawach ……………………………….. | 910 |
| ऋण / कर्ज मुक्ति कवच<br>Rin / Karaj Mukti Kawach …….…………………….. | 1250 | त्रिशूल बीसा कवच<br>Trishool Visha Kawach …….…………………………... | 910 |
| शत्रु विजय कवच<br>Shatru Vijay Kawach ……………………………….. | 1050 | व्यापर वृद्धि कवच<br>Vyapar Vruddhi Kawach ……………………………... | 910 |
| विवाह बाधा निवारण कवच<br>Vivah Badha Nivaran Kawach ……………………….. | 1050 | सर्व रोग निवारण कवच<br>Sarv Rog Nivaran Kawach …………………………... | 910 |
| स्वस्तिक बीसा कवच<br>Swastik Visha Kawach …….……………………… | 1050 | शारीरिक शक्ति वर्धक कवच<br>Sharirik Shakti Vardhak Kawach ..……………………. | 910 |
| मस्तिष्क पृष्टि वर्धक कवच<br>Mastishk Prushti Vardhak Kawach …………………… | 820 | सिद्ध शुक्र कवच<br>Siddha Shukra Kawach ……………………………….. | 820 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| वाणी पृष्टि वर्धक कवच<br>Vani Prushti Vardhak Kawach ............................. | 820 | सिद्ध शनि कवच<br>Siddha Shani Kawach ......................................... | 820 |
| कामना पूर्ति कवच<br>Kamana Poorti Kawach .................................. | 820 | सिद्ध राहु कवच<br>Siddha Rahu Kawach ......................................... | 820 |
| विरोध नाशक कवच<br>Virodh Nashan Kawach .................................. | 820 | सिद्ध केतु कवच<br>Siddha Ketu Kawach ......................................... | 820 |
| सिद्ध सूर्य कवच<br>Siddha Surya Kawach ...................................... | 820 | रोजगार वृद्धि कवच<br>Rojgar Vruddhi Kawach ..................................... | 730 |
| सिद्ध चंद्र कवच<br>Siddha Chandra Kawach .................................. | 820 | विघ्न बाधा निवारण कवच<br>Vighna Badha Nivaran Kawah .............................. | 730 |
| सिद्ध मंगल कवच (कुजा)<br>Siddha Mangal Kawach (Kuja) .......................... | 820 | नज़र रक्षा कवच<br>Najar Raksha Kawah ........................................ | 730 |
| सिद्ध बुध कवच<br>Siddha Bhudh Kawach ..................................... | 820 | रोजगार प्राप्ति कवच<br>Rojagar Prapti Kawach ...................................... | 730 |
| सिद्ध गुरु कवच<br>Siddha Guru Kawach ....................................... | 820 | दुर्भाग्य नाशक कवच<br>Durbhagya Nashak ........................................... | 640 |





उपरोक्त कवच के अलावा अन्य समस्या विशेष के समाधान हेतु एवं उद्देश्य पूर्ति हेतु कवच का निर्माण किया जाता हैं। कवच के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। *कवच मात्र शुभ कार्य या उद्देश्य के लिये >> Shop Online | Order Now

# GURUTVA KARYALAY

Call Us - 9338213418, 9238328785,
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and www.gurutvajyotish.com

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

# Gemstone Price List

| NAME OF GEM STONE | | GENERAL | MEDIUM FINE | FINE | SUPER FINE | SPECIAL |
|---|---|---|---|---|---|---|
| Emerald | (पन्ना) | 200.00 | 500.00 | 1200.00 | 1900.00 | 2800.00 & above |
| Yellow Sapphire | (पुखराज) | 550.00 | 1200.00 | 1900.00 | 2800.00 | 4600.00 & above |
| **Yellow Sapphire** Bangkok | (बैंकोक पुखराज) | 550.00 | 1200.00 | 1900.00 | 2800.00 | 4600.00 & above |
| Blue Sapphire | (नीलम) | 550.00 | 1200.00 | 1900.00 | 2800.00 | 4600.00 & above |
| White Sapphire | (सफ़ेद पुखराज) | 1000.00 | 1200.00 | 1900.00 | 2800.00 | 4600.00 & above |
| **Bangkok Black Blue** | **(बैंकोक नीलम)** | 100.00 | 150.00 | 190.00 | 550.00 | 1000.00 & above |
| Ruby | (माणिक) | 100.00 | 190.00 | 370.00 | 730.00 | 1900.00 & above |
| Ruby Berma | (बर्मा माणिक) | 5500.00 | 6400.00 | 8200.00 | 10000.00 | 21000.00 & above |
| Speenal | (नरम माणिक/लालडी) | 300.00 | 600.00 | 1200.00 | 2100.00 | 3200.00 & above |
| Pearl | (मोति) | 30.00 | 60.00 | 90.00 | 120.00 | 280.00 & above |
| Red Coral (4 रति तक) | (लाल मूंगा) | 125.00 | 190.00 | 280.00 | 370.00 | 460.00 & above |
| Red Coral (4 रति से उपर) | (लाल मूंगा) | 190.00 | 280.00 | 370.00 | 460.00 | 550.00 & above |
| White Coral | (सफ़ेद मूंगा) | 73.00 | 100.00 | 190.00 | 280.00 | 460.00 & above |
| Cat's Eye | (लहसुनिया) | 25.00 | 45.00 | 90.00 | 120.00 | 190.00 & above |
| Cat's Eye ODISHA | (उडिसा लहसुनिया) | 280.00 | 460.00 | 730.00 | 1000.00 | 1900.00 & above |
| Gomed | (गोमेद) | 19.00 | 28.00 | 45.00 | 100.00 | 190.00 & above |
| Gomed CLN | (सिलोनी गोमेद) | 190.00 | 280.00 | 460.00 | 730.00 | 1000.00 & above |
| Zarakan | (जरकन) | 550.00 | 730.00 | 820.00 | 1050.00 | 1250.00 & above |
| Aquamarine | (बेरुज) | 210.00 | 320.00 | 410.00 | 550.00 | 730.00 & above |
| Lolite | (नीली) | 50.00 | 120.00 | 230.00 | 390.00 | 500.00 & above |
| Turquoise | (फ़िरोजा) | 100.00 | 145.00 | 190.00 | 280.00 | 460.00 & above |
| Golden Topaz | (सुनहला) | 28.00 | 46.00 | 90.00 | 120.00 | 190.00 & above |
| Real Topaz | (उडिसा पुखराज/टोपज) | 100.00 | 190.00 | 280.00 | 460.00 | 640.00 & above |
| **Blue Topaz** | **(नीला टोपज)** | 100.00 | 190.00 | 280.00 | 460.00 | 640.00 & above |
| White Topaz | (सफ़ेद टोपज) | 60.00 | 90.00 | 120.00 | 240.00 | 410.00& above |
| Amethyst | (कटेला) | 28.00 | 46.00 | 90.00 | 120.00 | 190.00 & above |
| Opal | (उपल) | 28.00 | 46.00 | 90.00 | 190.00 | 460.00 & above |
| Garnet | (गारनेट) | 28.00 | 46.00 | 90.00 | 120.00 | 190.00 & above |
| Tourmaline | (तुर्मलीन) | 120.00 | 140.00 | 190.00 | 300.00 | 730.00 & above |
| Star Ruby | (सुर्यकान्त मणि) | 45.00 | 75.00 | 90.00 | 120.00 | 190.00 & above |
| Black Star | (काला स्टार) | 15.00 | 30.00 | 45.00 | 60.00 | 100.00 & above |
| Green Onyx | (ओनेक्स) | 10.00 | 19.00 | 28.00 | 55.00 | 100.00 & above |
| Lapis | (लाजर्वत) | 15.00 | 28.00 | 45.00 | 100.00 | 190.00 & above |
| Moon Stone | (चन्द्रकान्त मणि) | 12.00 | 19.00 | 28.00 | 55.00 | 190.00 & above |
| Rock Crystal | (स्फ़टिक) | 19.00 | 46.00 | 15.00 | 30.00 | 45.00 & above |
| Kidney Stone | (दाना फ़िरंगी) | 09.00 | 11.00 | 15.00 | 19.00 | 21.00 & above |
| Tiger Eye | (टाइगर स्टोन) | 03.00 | 05.00 | 10.00 | 15.00 | 21.00 & above |
| Jade | (मरगच) | 12.00 | 19.00 | 23.00 | 27.00 | 45.00 & above |
| Sun Stone | (सन सितारा) | 12.00 | 19.00 | 23.00 | 27.00 | 45.00 & above |

**Note : Bangkok** (Black) Blue for Shani, not good in looking but mor effective, **Blue Topaz** not Sapphire This Color of Sky Blue, For Venus

## GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 09338213418, 09238328785

Email Us:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in, gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

# GURUTVA KARYALAY

| | YANTRA LIST | EFFECTS |
|---|---|---|
| | **Our Splecial Yantra** | |
| 1 | 12 – YANTRA SET | For all Family Troubles |
| 2 | VYAPAR VRUDDHI YANTRA | For Business Development |
| 3 | BHOOMI LABHA YANTRA | For Farming Benefits |
| 4 | TANTRA RAKSHA YANTRA | For Protection Evil Sprite |
| 5 | AAKASMIK DHAN PRAPTI YANTRA | For Unexpected Wealth Benefits |
| 6 | PADOUNNATI YANTRA | For Getting Promotion |
| 7 | RATNE SHWARI YANTRA | For Benefits of Gems & Jewellery |
| 8 | BHUMI PRAPTI YANTRA | For Land Obtained |
| 9 | GRUH PRAPTI YANTRA | For Ready Made House |
| 10 | KAILASH DHAN RAKSHA YANTRA | - |
| | **Shastrokt Yantra** | |
| 11 | AADHYA SHAKTI AMBAJEE(DURGA) YANTRA | Blessing of Durga |
| 12 | BAGALA MUKHI YANTRA (PITTAL) | Win over Enemies |
| 13 | BAGALA MUKHI POOJAN YANTRA (PITTAL) | Blessing of Bagala Mukhi |
| 14 | BHAGYA VARDHAK YANTRA | For Good Luck |
| 15 | BHAY NASHAK YANTRA | For Fear Ending |
| 16 | CHAMUNDA BISHA YANTRA (Navgraha Yukta) | Blessing of Chamunda & Navgraha |
| 17 | CHHINNAMASTA POOJAN YANTRA | Blessing of Chhinnamasta |
| 18 | DARIDRA VINASHAK YANTRA | For Poverty Ending |
| 19 | DHANDA POOJAN YANTRA | For Good Wealth |
| 20 | DHANDA YAKSHANI YANTRA | For Good Wealth |
| 21 | GANESH YANTRA (Sampurna Beej Mantra) | Blessing of Lord Ganesh |
| 22 | GARBHA STAMBHAN YANTRA | For Pregnancy Protection |
| 23 | GAYATRI BISHA YANTRA | Blessing of Gayatri |
| 24 | HANUMAN YANTRA | Blessing of Lord Hanuman |
| 25 | JWAR NIVARAN YANTRA | For Fewer Ending |
| 26 | JYOTISH TANTRA GYAN VIGYAN PRAD SHIDDHA BISHA YANTRA | For Astrology & Spritual Knowlage |
| 27 | KALI YANTRA | Blessing of Kali |
| 28 | KALPVRUKSHA YANTRA | For Fullfill your all Ambition |
| 29 | KALSARP YANTRA (NAGPASH YANTRA) | Destroyed negative effect of Kalsarp Yoga |
| 30 | KANAK DHARA YANTRA | Blessing of Maha Lakshami |
| 31 | KARTVIRYAJUN POOJAN YANTRA | - |
| 32 | KARYA SHIDDHI YANTRA | For Successes in work |
| 33 | • SARVA KARYA SHIDDHI YANTRA | For Successes in all work |
| 34 | KRISHNA BISHA YANTRA | Blessing of Lord Krishna |
| 35 | KUBER YANTRA | Blessing of Kuber (Good wealth) |
| 36 | LAGNA BADHA NIVARAN YANTRA | For Obstaele Of marriage |
| 37 | LAKSHAMI GANESH YANTRA | Blessing of Lakshami & Ganesh |
| 38 | MAHA MRUTYUNJAY YANTRA | For Good Health |
| 39 | MAHA MRUTYUNJAY POOJAN YANTRA | Blessing of Shiva |
| 40 | MANGAL YANTRA ( TRIKON 21 BEEJ MANTRA) | For Fullfill your all Ambition |
| 41 | MANO VANCHHIT KANYA PRAPTI YANTRA | For Marriage with choice able Girl |
| 42 | NAVDURGA YANTRA | Blessing of Durga |

| | YANTRA LIST | EFFECTS |
|---|---|---|
| 43 | NAVGRAHA SHANTI YANTRA | For good effect of 9 Planets |
| 44 | NAVGRAHA YUKTA BISHA YANTRA | For good effect of 9 Planets |
| 45 | • SURYA YANTRA | Good effect of Sun |
| 46 | • CHANDRA YANTRA | Good effect of Moon |
| 47 | • MANGAL YANTRA | Good effect of Mars |
| 48 | • BUDHA YANTRA | Good effect of Mercury |
| 49 | • GURU YANTRA (BRUHASPATI YANTRA) | Good effect of Jyupiter |
| 50 | • SUKRA YANTRA | Good effect of Venus |
| 51 | • SHANI YANTRA (COPER & STEEL) | Good effect of Saturn |
| 52 | • RAHU YANTRA | Good effect of Rahu |
| 53 | • KETU YANTRA | Good effect of Ketu |
| 54 | PITRU DOSH NIVARAN YANTRA | For Ancestor Fault Ending |
| 55 | PRASAW KASHT NIVARAN YANTRA | For Pregnancy Pain Ending |
| 56 | RAJ RAJESHWARI VANCHA KALPLATA YANTRA | For Benefits of State & Central Gov |
| 57 | RAM YANTRA | Blessing of Ram |
| 58 | RIDDHI SHIDDHI DATA YANTRA | Blessing of Riddhi-Siddhi |
| 59 | ROG-KASHT DARIDRATA NASHAK YANTRA | For Disease- Pain- Poverty Ending |
| 60 | SANKAT MOCHAN YANTRA | For Trouble Ending |
| 61 | SANTAN GOPAL YANTRA | Blessing Lorg Krishana For child acquisition |
| 62 | SANTAN PRAPTI YANTRA | For child acquisition |
| 63 | SARASWATI YANTRA | Blessing of Sawaswati (For Study & Education) |
| 64 | SHIV YANTRA | Blessing of Shiv |
| 65 | SHREE YANTRA (SAMPURNA BEEJ MANTRA) | Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & Peace |
| 66 | SHREE YANTRA SHREE SUKTA YANTRA | Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth |
| 67 | SWAPNA BHAY NIVARAN YANTRA | For Bad Dreams Ending |
| 68 | VAHAN DURGHATNA NASHAK YANTRA | For Vehicle Accident Ending |
| 69 | VAIBHAV LAKSHMI YANTRA (MAHA SHIDDHI DAYAK SHREE MAHALAKSHAMI YANTRA) | Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & All Successes |
| 70 | VASTU YANTRA | For Bulding Defect Ending |
| 71 | VIDHYA YASH VIBHUTI RAJ SAMMAN PRAD BISHA YANTRA | For Education- Fame- state Award Winning |
| 72 | VISHNU BISHA YANTRA | Blessing of Lord Vishnu (Narayan) |
| 73 | VASI KARAN YANTRA | Attraction For office Purpose |
| 74 | • MOHINI VASI KARAN YANTRA | Attraction For Female |
| 75 | • PATI VASI KARAN YANTRA | Attraction For Husband |
| 76 | • PATNI VASI KARAN YANTRA | Attraction For Wife |
| 77 | • VIVAH VASHI KARAN YANTRA | Attraction For Marriage Purpose |

**Yantra Available @:-** Rs- 325 to 12700 and Above…..

# सूचना

- पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख पत्रिका के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- लेख प्रकाशित होना का मतलब यह कतई नहीं कि कार्यालय या संपादक भी इन विचारो से सहमत हों।
- नास्तिक/ अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- पत्रिका में प्रकाशित किसी भी नाम, स्थान या घटना का उल्लेख यहां किसी भी व्यक्ति विशेष या किसी भी स्थान या घटना से कोई संबंध नहीं हैं।
- प्रकाशित लेख ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित होने के कारण यदि किसी के लेख, किसी भी नाम, स्थान या घटना का किसी के वास्तविक जीवन से मेल होता हैं तो यह मात्र एक संयोग हैं।
- प्रकाशित सभी लेख भारतिय आध्यात्मिक शास्त्रों से प्रेरित होकर लिये जाते हैं। इस कारण इन विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- अन्य लेखको द्वारा प्रदान किये गये लेख/प्रयोग कि प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं। और नाहीं लेखक के पते ठिकाने के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर लिखे होते हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं।
- यह जिन्मेदारी मंत्र-यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी। क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- पाठकों कि मांग पर एक हि लेखका पूनः प्रकाशन करने का अधिकार रखता हैं। पाठकों को एक लेख के पूनः प्रकाशन से लाभ प्राप्त हो सकता हैं।
- अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

**(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)**

FREE
E CIRCULAR

# गुरुत्व ज्योतिष साप्ताहिक ई-पत्रिका

## 18 नवम्बर से 24 नवम्बर 2018

**संपादक**

चिंतन जोशी

**संपर्क**

## गुरुत्व ज्योतिष विभाग

## गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

**फोन**

91+9338213418, 91+9238328785

**ईमेल**

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

**वेब**

www.gurutvakaryalay.com

www.gurutvajyotish.com

www.shrigems.com

http://gk.yolasite.com/

www.gurutvakaryalay.blogspot.com

# हमारा उद्देश्य

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

जहाँ आधुनिक विज्ञान समाप्त हो जाता हैं। वहां आध्यात्मिक ज्ञान प्रारंभ हो जाता हैं, भौतिकता का आवरण ओढे व्यक्ति जीवन में हताशा और निराशा में बंध जाता हैं, और उसे अपने जीवन में गतिशील होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं हो पाता क्योकि भावनाए हि भवसागर हैं, जिसमे मनुष्य की सफलता और असफलता निहित हैं। उसे पाने और समजने का सार्थक प्रयास ही श्रेष्ठकर सफलता हैं। सफलता को प्राप्त करना आप का भाग्य ही नहीं अधिकार हैं। ईसी लिये हमारी शुभ कामना सदैव आप के साथ हैं। आप अपने कार्य-उद्देश्य एवं अनुकूलता हेतु यंत्र, ग्रह रत्न एवं उपरत्न और दुर्लभ मंत्र शक्ति से पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित चिज वस्तु का हमेंशा प्रयोग करे जो १००% फलदायक हो। ईसी लिये हमारा उद्देश्य यहीं हे की शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त सभी प्रकार के यन्त्र- कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहोचाने का हैं।

सूर्य की किरणे उस घर में प्रवेश करापाती हैं।
जीस घर के खिड़की दरवाजे खुले हों।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com




# GURUTVA JYOTISH

# Weekly

# 18-Nov to 24-Nov 2018